तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मास पत्रिका

फरवरी-2021

रु.5/-

तिरुमल में
रथसप्तमी
१९-०२-२०२१

01-01-2021 के दिन अंग्रेजी नववर्ष पर ति.ति.दे. की ओर से आंध्रप्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री विश्वभूषण जी और माननीय मुख्य मंत्री श्री वाई.एस.जगनमोहन रेड्डी जी आदि को स्वामी जी का प्रसाद देने के साथ ति.ति.दे. न्यास मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी अपनी बधाइया देते हैं।

15-01-2021 शुक्रवार ति.ति.दे. की ओर से गुंटूर जिला नरसरावपेट में संपन्न गो (कामधेनु) पूजा। इस अवसर पर आंध्रप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगनमोहन रेड्डी जी, ति.ति.दे.न्यास मंडली के आध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहररेड्डी जी, आई.ए.एस., आदि ने भाग लिया।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता ४-८)

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिये, पाप-कर्म करनेवालों का विनाश करने के लिये और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने केलिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

सर्ववेदमयी गीता सर्वधर्ममयो मनुः।
सर्व तीर्थमयी गंगा सर्व देव मयो हरिः॥

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव)

गीता सब वेदों की परिपूर्ण रूपिणी है। मनु सर्व धर्ममय है। गंगा सब तीर्थों से परिपूरित है। विष्णु सर्व देवमय है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५१ फरवरी-२०२१ अंक-०९

विषयसूची

वसंत पंचमी (वसंतोत्सव)	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	07
श्रीकुरेश स्वामीजी	श्रीमती उषादेवी अगर्वाल	10
नमामि सूर्यम्!	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	13
तिरुक्कच्चिनम्बि यानी काञ्चीपूर्ण स्वामीजी	श्रीमती अजाय कुमार.सरफ	18
श्री गोविंदराजस्वामीजी का प्लवोत्सव	डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी	20
भीष्माचार्य - व्यक्तित्व के धनी	डॉ.के.एम.भवानी	24
श्रीकृष्णकर्णामृतम् एक अवलोकन	डॉ.के.सुधाकर राव	31
श्री वेंकटेश सुप्रभात	श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी	33
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	36
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	39
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	41
कुमारधारा तीर्थ	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	44
तिरुमालै आण्डान (मालाधर स्वामी)	श्रीमती पूजा मधवदास.अर्गवाल	46
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	48
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	49
बालनीति- रामकृपा! राजकृपा!	श्री के.रामनाथन	50
चित्रकथा- उत्तम पुत्र	डॉ.एम.रजनी	52
क्विज	एन.प्रत्युषा	54

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - सूर्यप्रभावाहन में वेंकटेश्वर स्वामीजी उत्सव मूर्ति, तिरुमल
चौथा कवर पृष्ठ - श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्वामी उत्सव मूर्ति, देवुनि कडपा

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
आचार्य के.राजगोपालन्

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम्

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

आदित्या नमः

उदये ब्रह्मरूपश्च मध्याह्नेतु महेश्वरः।

अस्तकाले स्वयं विष्णुः त्रिमूर्त्रिश्च दिवाकरः।। (ऋग्वेद में उल्लेख हैं)

सबेरे उदय के समय सूरज का रूप भगवान ब्रह्मा दोपहर के समय शिव और अस्त के समय पर श्री विष्णु के रूप में प्रदर्शित होते हैं।

इस धरती पर तमस को दूर करके ज्योती को फैलानेवाला प्रभाकर सभी जीवों को शक्ति प्रदान करनेवाला भी है। सभी जीवों के जीवनाधार सूरज की महान शक्ति को वेद और पुराण बडे पैमाने पर गुणगान किया। ऋग्वेद सूरज को तीन प्रकार की अग्नियों में श्रेष्ठ अग्नि कहता है। यजुर्वेद कहता है कि सारे संसार को दीप्तिमान करनेवाल सूरज है। अथर्ववेद कहता है कि जो सूर्यदेवी की उपासना करते हैं वे हृदय रोग से मुक्त होते हैं।

सूर्य भगवान मानव और जगत के अधंकार को मिटाकर अपनी रोशनी से प्रकाश फैलानेवाला लोकबांधव है। अपनी किरणों से समस्त जीवकोटि को जागृत करनेवाला प्रत्यक्ष देव ही सूर्य भगवान है। वैज्ञानिकों की दृष्टि से देखने से अनंत विश्व के अगणित नक्षत्रों में से एक नक्षत्र सूर्य है। आराधना भाव से देखने वालों केलिए सप्ताश्वरथमारूढ़ं होकर धरती को रक्षण छत्र पकडनेवाला कर्मसाक्षी है। जब सूर्य मकरराशी में प्रवेश करते समय समस्त मानवों केलिए पर्व दिन होगा। आदित्य के अस्तित्व और उनके निर्विराम गमन केलिए पुराणों में कई अर्थ प्रचलित हैं। हमारे त्योहारों में एक संक्रांति ही सौरगमन के अनुसार मनानेवाला त्योहार है। संक्रांति य संक्रमण का अर्थ है बदलना। कालचक्र में परिवर्तन होने से ही सृष्टि के सभी जीवराशियों को आहार मिलेगा। कालचक्र बदलने केलिए सूरज का गमन बदलना चाहिए। बदलते हुए सूर्य गमन ही हमारेलिए पर्व हुआ।

रथसप्तमी का दिन सूर्य का जन्म दिन के रूप में मनाया जाता है। सूर्य भगवान को श्री नारायण का अंश मानते हैं। इसलिए सूरज को सूर्य नारायण के नाम से भी बुलाते हैं। हम जानते है कि भगवान श्री नारायण अलंकार प्रिय है। वैसे ही सूरज नमस्कार प्रिय है। कलियुग वैकुण्ठ नाम से प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र तिरुमल में रथसप्तमी एक दिवसीय ब्रह्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। उस दिन प्रातः सूर्य-प्रभावाहन, लघुशेषवाहन, गरुडवाहन, हनुमंतवाहन, कल्पवृक्षवाहन, सर्वभूपालवाहन और अंत में चंद्रवाहन में श्री बालाजी विराजमान होकर भक्तों को दर्शन देते हैं।

गंगा और शांतन महाराज के पुत्र पिता की इच्छा पूर्ती केलिए सत्यवती के पिता के सामने पंचभूतों को साक्षी मानकर भीषण प्रतीज्ञा कर हस्तिनापुर सिंहासन की रक्षा केलिए आजीवन ब्रह्मचारीव्रत का पालन कर, पिता के साथ सत्यवती की शादी कराकर पिता से इच्छामृत्यु का वरदान पाकर, उत्तरायण के पुण्य काल में अपने प्राण छोडनेवाले महान व्यक्ति भीष्म पितामह है। माघ के महीने में ही रथसप्तमी भीष्माष्टमी, भीष्मएकादशी माघ पूर्णिमा आदि मनाया जाता है।

सप्तास्वरथमारूढ होकर समस्त लोकों को प्रकाशप्रदान करनेवाले दिनकर जी आप एक ही सारी पृथ्वी को सस्यश्यामल कर संपूर्ण जीव कोटि को जीवनदान प्रदानकरनेवाला भास्कर जी हमारी ओर से शतकोटि प्रणाम स्वीकार करें।

वसंत पंचमी (वसंतोत्सव)

- श्री ज्योतिन्द्र के. अजवालिया
मोबाइल - ९८२५९१३६३६

हमारी भारतीय संस्कृति में, हमारे शास्त्र और ऋषि मुनियों ने वेदों के वचन अनुसार हर एक दिन की महत्ता बताई है। आज हम यहाँ एक ऐसा पवित्र मंगल पर्व के बारे में अनुसंधान करने जा रहे हैं। एक ऐसा पवित्र और मनोरम दिवस यानी के वसंत पंचमी। महा शुक्ल पंचमी को वसंत पंचमी कहते हैं। वसंत पंचमी का उत्सव मानव केलिए कल्याणकारी उत्सव है। इस दिन से वसंत ऋतु का प्रारंभ होता है, सरस्वती माता की पूजा का भी विशेष दिन हैं, विद्यारंभ के लिए वसंत पंचमी उत्तमतिथि कही गई है। मानव को, प्रकृति के सभी जीवों को, यह उत्सव यह वातावरण प्रफुल्लितता और आनंद प्रदान करता है।

वसंत का आगमन और प्रकृति का वैभव

ऋतु काल के अनुसार इस दिन से वसंत का प्रारंभ होता है, वसंत जन्म लेती है। प्रकृति खिलने से मानव प्रसन्न होकर उसकी ओर आकर्षित होते हैं। वसंत के आगमन से मानो धरती ने नवयौवन धारण कर लिया हो। जहाँ-जहाँ हमारी नजर जाती है वहाँ-वहाँ तक हरियाली ही नजर आती हैं। नवरंगो से रंगीन नवनीत फूलों हमारे मन को प्रसन्नता प्रदान करता है, हमारी आँखों को शीतलता प्रदान करता है। इस वातावरण से कोई भी अस्वस्थ मानव संपूर्ण स्वस्थताप्राप्त करता है। लेकिन जरुरी है निसर्ग की और मीठी नजर करना। वसंत में सरलता है सहजता है और निखालसता भी है। इस गुणों से वसंत सभी जीवों का मन हर लेती है। भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के विभूति योग में कहा है कि ऋतु में वसंत में ही हुए। वाल्मीकि रामायण में भी वसंत का मनमोहक वर्णन किया गया है। हर एक कवि और लेखक ने अपनी कलम से वसंत का अद्भुत वर्णन किया है। वसंत सृष्टि का यौवन है तो यौवन जीवन की वसंत है। वसंत याने के निसर्ग का छलकता वैभव, जीवन खिलने का उत्सव और तरुवरों का श्रृंगार है।

वसंत ऋतु में पृथ्वी पर आम्रकुंज मोहर की मादक खुशबू से महक उठते हैं और इस आम्र कुंज में कोयल का मधुर गुंजन भी हमारे मन को आनंद से भर देता है। वातावरण भी खुशनुमा हो जाता है, फूल गुलाबी ठंडी, थोडी सी शीतलहर है थोडी सी हल्की सी धूप है। वास्तव में प्रकृति का वसंत का ये

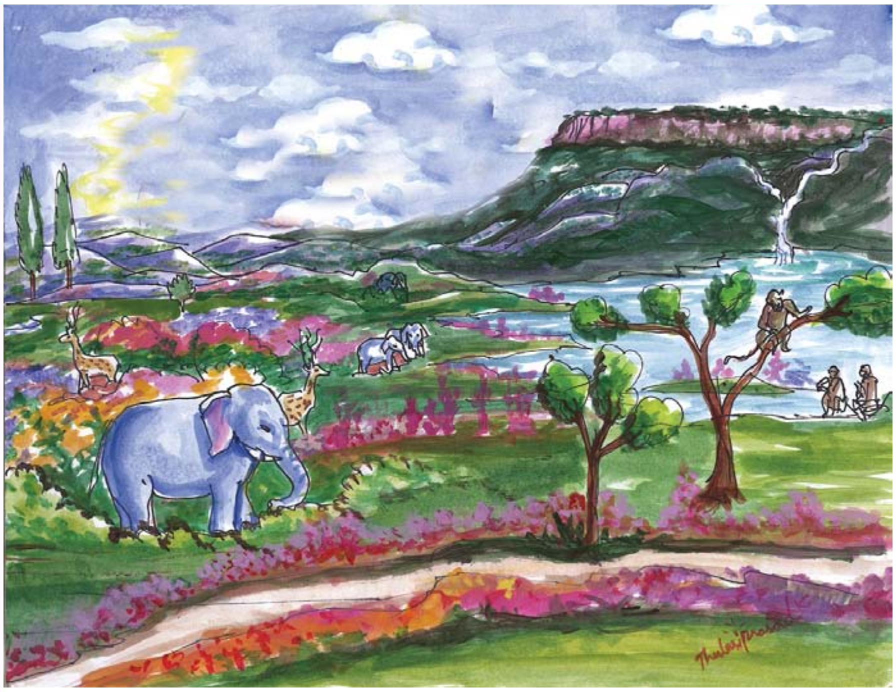

वैभव सभी जीवों को स्वस्थता और प्रसन्नता से भर देता है। मानव जीवन के लिए वसंत एक महान भेंट है।

माँ सरस्वती को भगवान श्री कृष्ण का वरदान

कहा जाता है कि वसंत पंचमी के दिन सरस्वती माता का प्रादुर्भाव हुआ था। कथा इस प्रकार है। दुर्गा, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती और सावित्री यह पांचों देवी प्रकृति की देवी कहलाती है। कला संज्ञक देवी भी कहलाती है। भगवान श्री कृष्ण ने सर्वप्रथम माँ सरस्वती की पूजा आराधना की थी। इस सरस्वती की विशेष पूजा आराधना से महामूर्ख भी पंडित बन जाता है।

एक समय की बात है सरस्वती ने भगवान श्रीकृष्ण को पति के रुप में पाने के लिए प्रस्ताव दिया, तब भगवान श्रीकृष्ण ने लोकहित के लिए एक बात कही, ''सरस्वती आप भगवान नारायण के पास पधारो मैं और भगवान नारायण एक ही है भगवान श्री हरि के पास लक्ष्मी जी के साथ-साथ आप भी सदा निवास करो, और विशेष रुप से पूरे ब्रह्मांड में महा शुक्ल पंचमी के दिन विद्यारंभ करने हेतु आपकी महान पूजा होगी इस से आपका गौरव और भी बढ जाएगा जीवन पर्यंत मनुष्य देवता मोक्षकामी, वसु, योगी, सिद्ध नाग, गंधर्व ओर राक्षस सभी आप की विशेष पूजा आराधना करेंगे, कुंभ में और पुस्तक में आप का आह्वान करेंगे, भोजपत्र में भी अक्षर के रुप में आप को अंकित करेंगे'' इस तरह भगवान श्री कृष्ण के वरदान से वसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती की विशेष पूजा आराधना होने लगी।

माँ सरस्वती पूजा से याज्ञवल्क्य शाप मुक्त बनकर देव गुरु बृहस्पति के समान बने

एक समय की बात है, अपने गुरु के शाप से याज्ञवलक्य की तमाम विध्या नष्ट हो गई थी। इस समय याज्ञवलक्य ''लोलार्ककुंड'' पर जा के सूर्यदेव की महान उपासना की। प्रसन्न होकर सूर्य देव ने वेद - वेदांग का ज्ञान दिया और माँ सरस्वती पूजा का विशेष विधान बताया। याज्ञवलक्य सूर्यदेव की आज्ञानुसार विशेष पूजा विधान किया। माँ सरस्वती बहुत प्रसन्न हुए और चली गयी तमाम विध्या पुनः प्राप्त हुई, सृष्टि में गुरु बृहस्पति के समान ख्याति हुई। इस वक्त याज्ञवलक्य जी ने महान स्तोत्र का गान किया। ये स्तोत्र जो भी एक साल तक गाये जिस से कोई महान मूर्ख भी महान पंडित बन जाता है। यह हे माँ सरस्वती की कृपा।

वसंत पंचमी के अवसर पर माँ सरस्वती का विशेष पूजा विधान

वसंत पंचमी के दिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि कर्म पूर्ण करके शुभ समय में,

शुभ मुहूर्त में बाजट पर धवल आसन बिछा के इस पर माँ सरस्वती की सुंदर मनोरम मूर्ति को प्रस्थापित किया जाता है। विशेष रुप से कुंभ घडे में और पुस्तक में माँ सरस्वती का आह्वान किया जाता है और भोजपत्र में सरस्वती यंत्र और कवच का भी अंकन किया जाता है। षोडशोपचार और राजोपचार से महान पूजा आराधना की जाती है। (भगवान श्रीकृष्ण ने ''कवशाखा'' में इस पूजा विधि का उल्लेख किया है।) पूजा विधान पूर्ण करने के बाद साधक और विद्यार्थी माँ सरस्वती की प्रसन्नता हेतु स्फटिक माला से सरस्वती मंत्रों का जप करने का विधान है।

विशेष मंत्र

१. ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै नमः

२. ॐ विधादेवी सरस्वती वरदे कामरुपिणी।
विद्यारंभ करिश्यामी सुधीर भवतु में सदा।।

३. ओम सरस्वती मया दृष्ट्वा वीणा पुस्तक धारिणी
हंस वाहनं संयुक्ता विद्यादानम करोतु मे।।

४. श्री सरस्वती स्तुति
या कुंदेंदु तुषारहारधवला या शुभवस्त्रावृता।
या वीणा वर दंड मंडित करा या श्वेत पद्मासना।

५. ओ शारदा तू आ मेरे जीवन में वाणी में वर्तन में मुझ कीर्तन में.... ओ शारदा तू आ मेरे जीवन में मयूर बनके छा जा मुझ जीवन वसंत में... वीणा के सुर बहाव मेरे कंठ में... ओ शारदा तुम आ मेरे जीवन में।

इस तरह बसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती का विशेष पूजा करने से माँ सरस्वती की अपार कृपा सदा हम पर बरसती है इस से हम को पद, प्रतिष्ठा, मान, सम्मान, विद्या सब कुछ प्राप्त होता है। इस कृपा और प्रसन्नता से हमारा जीवन सदा के लिए बसंत से परिपूर्ण हो जाता है। आध्यात्मिक परिभाषा में कहा जाता है कि जिस मानव ने भगवत अनुभव प्राप्त कर लिया हो, भगवत कृपा और भगवत प्रेम प्राप्त कर लिया हो, जिस मानव ने प्रभु का पवित्र स्पर्श कर लिया हो उसका जीवन सदाबहार वसंत हुई है। इस के जीवन में पतझड कभी भी आती ही नहीं।

श्रीकुरेश स्वामीजी

- श्रीमती उषादेवी अगर्वाल
मोबाइल - ९९०३३८८००५

तिरुनक्षत्र : पुष्य मास हस्त नक्षत्र

आवतार स्थल : कूरम्

आचार्य : श्रीरामानुज स्वामीजी

शिष्य : तिरुवरंगत्तमुदानार

परमपद प्रस्थान प्रदेश : श्रीरंगं

ग्रंथ रचना सूची : पञ्च स्तव (श्री वैकुण्ठ स्तव, अति मानुष स्तव, सुन्दर बाहु स्तव, वरदराज स्तव और श्री स्तव), ''यो नित्यम् अच्युत / लक्ष्मी नाथ'' तनियन

१) कुरम् गाँव के सज्ञन घराने में सन् १०१० (सौम्य वर्ष, पुष्य मास हस्ता नक्षत्र) में कूरताळ्वार् और पेरुन्देवी अम्माळ को पैदा हुए थे। इनका ''श्रीवत्साङ्गन्'' कहके नामकरन किया गया।

२) देवपेरुमाळ की सेवा करने वाले तिरुकच्चि नम्बि से निर्देश प्राप्त करते थे।

३) आण्डाळ से विवाह किया जो उनके समाना उत्कर्ष गुणों से परिपूर्ण थी।

४) श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी का शरण पाकर उन से पञ्च संस्कार प्राप्त किया।

५) याचकों को भक्तिपूर्वक अन्नदान देकर संतुष्ट करने के लिये उन्होंने विशाल अन्नशाला बनवा रखी थी। जब रात्री में उसके भारी किवाडों को बंद किया जाता था तो मेघ गर्जना के समान एक ध्वनि उत्पन्न होती थी। एक रात श्री वरद वल्लभा अम्माजी ने श्री वरदराज भगवान से इसके बारे में पूछा, और भगवान से श्री कुरेश स्वामीजी के वैभव के बारे में जानकर उनसे मिलने की इच्छा जताई। यह सुनकर श्री कुरेश स्वामीजी ने सोचा मैं कृतघ्न दुरभिमानी और अम्माजी द्वारा मुझ अकिंचन को मिलने की इच्छा? ऐसा विचार कर श्री कुरेश स्वामीजी ने समस्त वैभव त्यागकर निराभिलाषी होते हुए अपनी पत्नी आंडाल के साथ श्रीरंगम की ओर प्रस्थान किया।

मार्ग में जब पता चला की आंडाल ने उनके दुग्ध पान के लिये एक रत्नजड़ित स्वर्ण प्याला साथ में रखा है जो भय का कारण बन रहा है। तब श्री कुरेश स्वामीजी ने वह प्याला फेंक दिया। इसी तरह अपना सारा धन कूरम् में छोड़कर, अपनी धर्म पत्नी के साथ श्री रङ्गम् पहुँचकर, भिक्षा माँगकर अपना जीवन बिताने लगे।

६) श्री रामानुज स्वामीजी के साथ बोधायन व्रति ग्रन्थ प्राप्त करने कश्मीर गये। वापस आते समय ग्रन्थ खो जाता है और परेशान एवं शोकाग्रस्त श्री रामानुज स्वामीजी को दिलासा देते है कि उन्होंने पूरा ग्रन्थ कंठस्थ कर लिया हैं। तत्पश्चात् श्रीरङ्गम् पहुँचकर, श्री

रामानुज स्वामीजी का अद्भुत ग्रन्थ ''श्री भाष्यम्'' को ताड़ पत्र में ग्रन्थस्थ करने में सहायता किये।

७) नित्य तिरुवरङ्ग अमुदनार् को उपदेश करके उन्हें श्रीरामानुज स्वामीजी का शिष्य बनाया। साथ ही एकाग्र रीती के अनुसार अपने (तिरुवरङ्गम अमुदनार् के) आधीन मन्दिर एवं मन्दिर की चाबियों को तदनन्तर श्रीरामानुज स्वमीजी को समर्पित किया। अतः आप ने (तिरुवरङ्ग अमुदनार् के) हृदय परिवर्तन में एहम पात्र का पोषण किया हैं।

८) यतिराज और उनके आदेश से ७४ पीठाधीश्वर ने अहर्निश श्रीवैष्णवता का प्रचार करने में जीवन लगा दिया। सारा भारत श्रीवैष्णवमय हो गया। भगवान को चिन्ता हो गयी की अब लीलाविभूति की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। यह सोचकर भगवान ने अपनी लीला निमित्त भगवद द्वेषी महाबलवान चोलराजा को उत्पन्न किया जो आगे चलकर कृमिकण्ठ नाम से कुख्यात हुआ। श्रीरामानुज स्वामीजी के बदले शैव राजा के पास खुद जाकर, उनका दावा ''परमात्म रुद्र ही हैं'' को तर्क से असत्य ठहराया और श्रीमन्नारायण के परत्त्व की स्थापना की। चोलराजा ने जबरदस्ती करने पर भी कुरेश स्वामीजी ने शिव से बढकर संसार में अन्य कोई श्रेष्ठ तत्व नहीं यह नहीं लिखा तो कुरेश स्वामीजी और महापुर्ण स्वामीजी को राजा ने नेत्रहीन कर दिया। और अंत में श्री वैष्णव दर्शन (सम्प्रदाय) के लिए खुद अपना दर्शन (आँखों) को खो दिया।

९) श्री रङ्गम् छोड़कर, तदनन्तर सुंदरगिरि में १२ साल बिताते हैं। सुन्दरबाहु भगवान (तिरुमाळिरुम् शौलै एम्पेरुमान्) के प्रति सुन्दर बाहु स्तवम् का गान करते हैं।

१०) श्रीरामानुज स्वामीजी के आदेश अनुसार, वरदराज भगवान के प्रति वरदराज स्तव गाते हैं और अपने सभी सम्बंधी के लिए मोक्ष की माँग करते हैं विशेष रुप से नालूरान् (जो उनके नेत्र खोने में प्रमुख पात्र थे) कुल मिलकर पाँच स्तव जो वेद रस से पूर्ण है उनकी रचना करते हैं - श्री वैकुण्ठ स्तव, अति मानुष स्तव, सुन्दर बाहु स्तव, वरदराज स्तव और श्री स्तव।

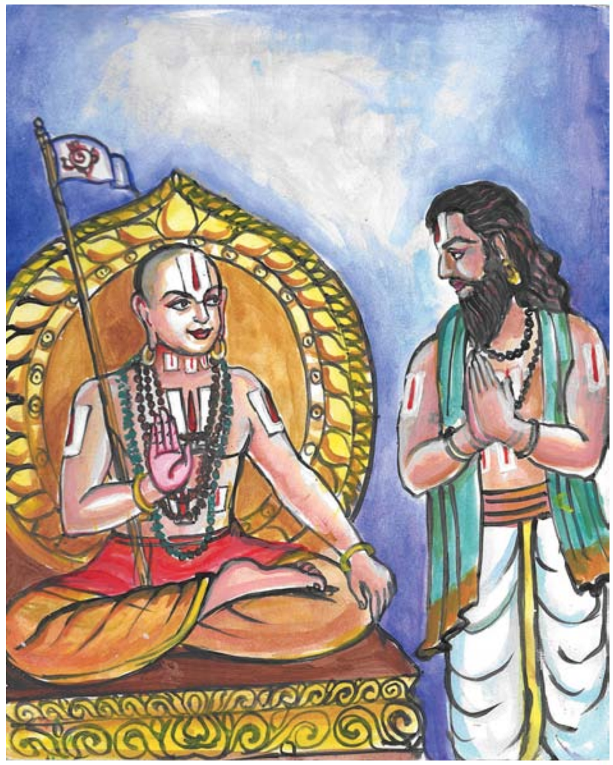

११) श्रीरामानुज स्वामीजी इन्हें श्री रङ्गम् में पौराणिक कैङ्कर्य करने में नियुक्त करते हैं और उनके समय में अपने सम्प्रदाय के ग्रन्थ निर्वाही (कालक्षेपाचार्य) के रुप में सेवा करते थे।

१२) श्री रंगनाथजी से महा प्रसाद प्राप्त करते हैं और प्रसाद पाने से उन्हें दो सुन्दर शिशु जन्म होते हैं। उन्हें पराशर और वेद व्यास भट्टर का नामकरण करते हैं।

१३) दिव्य प्रबन्ध अनुभव में इतने मस्तमञ्क होते थे कि जब कभी भी उपन्यास शुरु करते हैं, वह अनुभव से अपने आँखों में आँसू भर देते थे या वह मूर्छित हो जाते थे।

१४) श्रीरंगनाथ भगवान इन से वार्तालाप करते थे।

१५) आखिर में श्रीरंगनाथ भगवान से मोक्ष की प्रार्थना करते हैं और श्रीरंगनाथ भगवान उनकी विनती को स्वीकार करते हैं। श्रीरामानुज स्वामीजी

उनसे पूछते हैं ''कैसे आप मेरे से पहले जा सकते हैं?'' उत्तर देते हुए कहते हैं ''तिरुवाय्मोळि के शूल विसुम्बणि मुगिळ के अनुसार जब एक जीवात्मा परमपद प्रस्थान होते हैं तब नित्य और मुक्त लोग स्वागत करते हुए उनकी पाद पूजन करते हैं। आप मुझसे ऐसा पेश आना इस से मैं असहमत हूँ। इसीलिए मैं आप से पहले निकल रहा हूँ।''

कूरताळ्वान् का तनियन

श्रीवत्स चिह्न मिश्रेभ्यो नम उक्तिम दीमहे:।
यदुक्तय: त्रयि कण्ठे यान्ति मङ्गल सूत्रताम्।।

मैं श्री कूरत्ताळ्वान् का नमन करता हूँ, जिनके पाँच स्तव वेदों के मङ्गल सूत्र के समान हैं और जिनके ज्ञान के बिना परदेवता के बारे में स्पष्टता नहीं मिलती।

श्रीरामनुज स्वामीज के प्रधान शिष्यों में से श्री कुरेश स्वामीजी एक हैं। काञ्चीपुरम के कूरम् गाँव में एक सज्ञन कुटुंब में इनका जन्म हुआ हैं। इन्हें श्री वैष्णव आचार्य के प्रतीक माना जाता हैं। श्रीरामानुज स्वामीजी के, श्रीकुरेश स्वामीजी यज्ञोपवीत के तथा श्री दाशरथी स्वामीजी त्रिदण्ड के प्रतीक है। आप श्री, तीन विषयों का घमंड न होने के कारण सुप्रसिद्ध एवं सर्वज्ञात हैं (अर्थात् अपने पढाई यानि ज्ञान पे, एवं धन पे और कुल पे गर्व करना)। तिरुवरङ्गत्तु अमुदनार रामानुज नूट्रन्दादि में आप श्री की प्रशंसा करते हुए गाते हैं ''मोळिइयै कडक्कुम् पेरुम् पुगळान् वन्झ मुक् कुरुम्बाम् कुळियै कडक्कुम् नम् कूरत्ताळवान्'' और यतिराज विंशति में श्रीवरवर मुनि स्वामीजी ने ''वाचामगोचर महागुण देशिकाग्य कूराधिनाथ'' कहके कीर्तन किया हैं। अर्थात् यहाँ सूचित करते हैं कि उनकी वैभवता को शब्दों मे वर्णन करने में अशक्तता हैं।

।।श्रीस्वामीजी का मंगल हो।।

।।श्रीलालाजी का मंगल हो।।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक ध्रुवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

नमामि सूर्यम्!

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण
मोबाइल - ९४४१२५४०६१

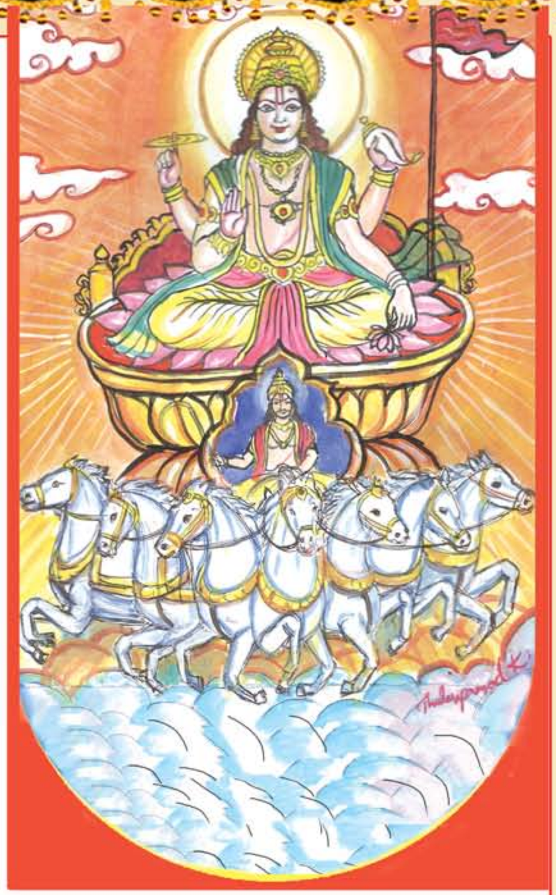

सूरज अपरिमित शक्ति का पुंज है। तुम में, मुझ में और इस समस्त स्थावर-जंगम प्रकृति निलय-चेतना का वह आधारभूत स्रोत है। सारे ग्रह-मंडल सूरज को ही केन्द्र-बिंदु मानते हुए उसकी परिक्रमा कर रहे हैं। सूरज से ही समस्त ग्रहों को ऊर्जा मिल रही है। वह कांति का अपरिमित स्रोत है।

ओं-भूर्भुवस्सुवः तत्सवितुर्वरेण्यम्

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। (ऋग्वेद)

उपर्युक्त महामंत्र ऋग्वेद में संग्रहित है, जिसके प्रणेता विश्वामित्र-महर्षि हैं। इस महामंत्र में ग्रह-घोष। निक्षिप्त है। इस महामंत्र की यह विशेषता है कि जो कोई इस महामंत्र का ध्यान करता है, तो उस में ''सूर्य-चेतना'' भर जाती है और उस साधक की चित्त-शक्ति की बढ़ोत्तरी हो करके, वह वांछित फल-सिद्धि प्राप्त कर सकेगा।

इतना ही नहीं जहाँ भी ऋग्वेद में संग्रहित इस महामंत्र का गायन होगा, वहाँ ''श्रीगायत्रीदेवी'' का आविर्भाव हो जाता है! गायत्री महादेवी बुद्धिबल-दायी देवता है, जो साधक को बुद्धिमत्ता प्रदान कर, उसे कार्य- संपन्न बना देती है। अतएव, इस महामंत्र को ''गायत्री महामंत्र'' कहा जाता है!! गायन करने से सिद्ध होने वाली महादेवी के नाम से यह गायत्री महामंत्र कहा जाता है।

गायत्री महामंत्र में सूरज की अपार शक्ति भरी होने के कारण गायत्री सूर्यभगवान का प्रतिरूप माना जाता है।

सूरज भगवान कैसे बना?!

सूर्य नक्षत्र है। नक्षत्र में अपार ऊर्जायुक्त वायुओं का निक्षेप निहित हैं! ये वायु अत्यंत ज्वलंत होते हैं और ये निरंतर ज्वाज्वल्यमान् हो जलते हुए करोडों-करोडों मील की दूरी तक ऊर्जा, कांति फेंकते हुए सारे ग्रह-मंडल को कांतिमान रखते हैं। कांति ही ऊर्जा है। ऊर्जा से ही प्राणशक्ति मिलती है। अतः प्राणशक्ति से ही बीज अंकुरित होते हैं, पौधे पनपते हैं, विकसित हो करके फल देते हैं। फल अनेक प्रकार के होते हैं। फल भोग-वस्तु हैं; फल खाद्यान्न पदार्य हैं। अर्थात् समस्त खाद्यान्न पदार्थ का जनक सूरज है! इस दौरान् सूरज सृष्टिकर्ता है; स्थिति कारक शक्ति है। अतः सूरज भगवान है!

आदिम मानव ने सूरज को भगवान माना था, क्यों कि वह रोशनी लाता था; जग को

जगाता था और समस्त प्राणियों में चेतना भरता था। जब सूरज डूब जाता था, तो धरापटल पर अंधकार छा जाता था, जो जंतुओं को बेहोश कर जाता था!!

पुराणों में सूर्यदेव

सूर्य स्वयं भगवान् है।

वह अदिति-कश्यप दंपतियों को जन्मा पुत्र था। चन्द्र भी इन्हीं दम्पतियों का पुत्र था। सूर्य के अपरिमित तेज के कारण ब्रह्मेंद्रादि सुरप्रमुखों ने उसे सात-सात चौदहों भुवनों में कांति का अधिनायक बना दिया था। भूलोक, भुवर्लोक, सुवर्लोकादि भुवनों में कांति बिखेरते हुए सूर, शूर अथवा सूर्य आकाश में निरंतर भ्रमण करता हुआ फिरता रहता है।

सूर्य निरंतर श्रामिक है। सूरज कभी विश्राम लेता नहीं है। चौदह भुवनों (लोकों) में कांति बिखेरता हुआ वह यात्रा करता रहता है। सूरज कभी अपने परिश्रम से विराम लेता नहीं है। भानु यदि कभी विराम ले, तो इन समस्त लोकों का नाश हो जाता है!

सूर्य का निज परिवार

अदिती-कश्यपों का यह मार्त्ताण्ड जब जवान हुआ, तो उसका ब्याह ''विश्वकर्मा'' की पुत्री ''संज्ञादेवी'' के साथ कर दिया गया था। विश्वकर्मा देवताओं का शिल्पी था।

संज्ञादेवी के साथ आदित्य का निर्वाह कुछ मास अच्छा ही चला था। लेकिन फिर भी, संज्ञावधू सूरज की तेजोमय कांति के कारण, उसे ठीक तरह देख नहीं पाती थी। इस अमित प्रकाशवान् प्रकाश से संज्ञादेवी को डर लगता था। अतएव वह अपने पति से दूर भाग जाती थी!

अब पति-पत्नियों के बीच इतना कुछ होने पर भी, उन्हें एक पुत्रोदय हुआ था। पुत्र का नाम ''श्राद्धदेव'' रखा गया था। दिवाकर ''विवस्वंत'' भी नाम रखता था। विवस्वंत का पुत्र ''वैवस्वंत'' कहलाता था। अतः श्रद्धदेव वैवस्वंत नाम से विख्यात होकर ''मनु'' बना था। हम सब मनु की संतान होने के कारण ही ''मानव के नाम से जानेजाते हैं। वैसे भरतखंड के बारह मन्वंतर है तो वैवस्वंत सातवाँ मनु है जो आज भी वैवस्वंत मन्वंतर चला रहा है।''

प्रभाकर की संतान

श्राद्धदेव अथवा वैवस्वंत के अलावा दिवाकर-संज्ञादेवी दंपतियों को यमराज नामक पुत्र का जन्म हुआ था। सूरज जब घर आया, तो अपनी पत्नी को आलिंगन रूप में हाथों में लिया था। संज्ञादेवी अपने पुरुष की असाधारण रोशनी न देख पाते हुए आँखें बंद करली', तो आदित्य ने कहा, ''ओ, देवी! मुझे देखते ही इस तरह आँख बंद कर रही हो, तो तुम्हें सकल लोक-भयंकर एक पुत्र जन्मेगा, जिसके दर्शन-मात्र से सब लोग अपनी आँखें बंद कर लेते हैं!!'न तभी तो, हर कोई प्राणी ''यमराज'' के दर्शन-मात्र से आँखें बंद कर लेते हैं!!''

इसके पश्चात् एक बार संज्ञादेवी ने भास्कर को चंचल नेत्रों से देखती हुए आँखें फड़फड़ाई, तो सूरज ने कहा कि उसके गर्भ में एक पुत्री का उदय होएगा। इस शाप (वरदान?) के कारण उसकी कोख से अति चंचला एवं कल्लोल तरंगिणी ''यमुना-नदी'' पैदा हुई!

इन तीनों संतानों के पश्चात् संज्ञादेवी का अपने तेजोवान् पति के साथ निर्वाह न हो पाया था। वह घर से भाग निकली और ''उत्तर कुरुभूमियों'' में जा कर, एक घोड़ी बन कर चरने लगी!!

दिवाकर की दूसरी पत्नी-छायादेवी

घर से भाग जाती-जाती संज्ञादेवी अपनी छाया को घर में प्रति-रोपित कर गयी थी, ताकि अपने अमित- कांतिवाले पति को शक न हो पावे! सूरज घर आया और उसी संज्ञदेवी की छाया से ही परिवार का निर्वाह करने लगा। वह न जानता था कि यह संज्ञदेवी नहीं, उसकी छाया है!

कई साल इस प्रकार गुजर गये।

दिवाकर और छाया में शनैश्चर (शनिदेव), सावर्णि नामके दो पुत्र हुए। और, ''तपती'' नाम के एक पुत्री भी हुई, जो आगे चल कर नदी बन कर भरतवर्ष के बीचों-बीच बहने लग गयी थी!

एक दिन जब प्रभाकर घर आया, तो शनैश्चर रो रहा था। पूछने पर कहा कि भाई यमराज ने उसे मारा था।

सूर्यदेव : ''क्यों, रे! छोटे भाई को काहे मारा?!''

यमराज : ''वाह! शनैश्चर मेरा सगाभाई थोडे ही है! वह तो मेरा सौतेला भाई है!! - छायादेवी का पुत्र!!''

सूर्यदेव : ''छायादेवी कौन है?!!...''

यमराज : ''मेरी माँ संज्ञादेवी की छाया!''

पुत्रक के उत्तर से मार्त्ताण्डदेव अवाक् रह गया!

उसने अपनी दिव्य-दृष्टि से उत्तर कुरुभूमियों में घोड़ी बन कर चरती हुई अपनी प्रिय-पत्नी संज्ञादेवी को दरसा। फिर वह तुरंत घोडे के वेष में जाकर अपनी प्रिय-रागिणी से जा मिला। संज्ञा ने अपने पति को पहचाना। दोनों पुण्य दंपतियों में अपार प्रेम का सागर उमड़ पड़ा। उस प्रेम के महत्तर आवेग में सूरज- संज्ञाओं का महामिलन संभव हुआ। उस संजोग के फलस्वरूप ''अश्विनीदेवताओं'' का जन्म हो गया था।

अश्विनी देवता दो थे, जो देवताओं के वैद्य हैं!!

इतने पर्याप्त न होकर सूरज भगवान का पुनः रेतः पतन हो चला, जिस रेत से ''रेवत'' नाम के पुत्र का उदय हुआ!

शंख-चक्र-त्रिशूल

इतना होने के बाद, घर से भाग कर-उत्तर कुरुभूमियों में धोड़ी बन कर रहने के बाद, सूरज के आकर घोड़े के रूप में अपने से संगम के बाद, अश्विनी देवताओं के उपजने के पश्चात्, रेवतकुमार के उदय होने के अनंतर-संज्ञादेवी ने अपने पति से अनुरोध किया था कि वह अपनी प्रचंड कांति को कम कर ले!

इस मुद्दे पर देव-प्रमुखों की बैठक हुई।

सब देवताओं का राय था कि संज्ञादेवी की पारिवारिक उलझन की सुलझन में उग्र दिवाकर स्वामी की रोशनी यथामात्र कम कर दी जाय! अपने दामाद प्रभाकर की आभा को घटाने का काम, मामा विश्वकर्मा को सौंप दिया गया था! विश्वकर्मा ने अपने कुशल कारीगर और अनुयाइयों के साथ सूर्य-बिंब को घिसा-पिशा कर, उसके आकार को घटाया, जिस क्रिया से उसकी कांति अपेक्षित मात्रा तक घट कर, संज्ञादेवी के साथ-साथ सबके लिए दर्शनीय बन गयी थी!! संज्ञादेवी अब अपने अमित आकर्षक पति के रूप को दर्शित कर, उस पर अमित मोहित तथा आकर्षित बन गयी थी!!

जब सूर्य-बिंब को कसौटी पर घिसाया गया था, तो वहाँ उस बिंब का ढेर-सारा चूर्ण इकट्ठा हो गया था! अति अमूल्य उस चूरण का क्या किया जाया?!? - सबकी सलाह पर विश्वकर्मा महराज ने श्रीमन्महाविष्णु के लिए ''सुदर्शन चक्र'', शिवजी के लिए ''त्रिशूल'' और देवताओं के पुजारी वसुओं के लिए आठ ''शख'' तैयार किये थे!!

सूर्य - ग्रहण

देव-राक्षसों ने क्षीरसागर का मंथन कर अमृत निकाला था। देवताओं में अमृत का वितरण हो रहा था। सिंहिका-राक्षसी का पुत्र ''राहु'' ने भाँप लिया था कि हर-हालत में राक्षसों को अमृत का पान नहीं हो सकेगा। किसी भी तरह देवतालोग उन्हें अमृत पीने से वंचित कर देंगे। यह वास्तव जान कर, राहुने देवता के बेश में जाकर, अमृत पाकर पी रहा था, जिस अकृत्य को सूर्यदेवने देख लिया। उसने तुरंत इस वंचना को अमृत बाँटते हुए मोहिनी-रूपी विष्णु-देव की नज़र में लाया। विष्णुभगवान ने तुरंत अपना चक्रायुध भेजा, तो चक्रायुध ने अमृत पीते हुए राहु के सिर का खंडन कर दिया, मगर, तब तक राहु अमृत निगल चुका था। इस कारण सिर के कटे जाने पर भी वह जिंदा रह गया!

सूरज के इस आचरण पर राहु बड़ा कुपित हुआ। प्रतीकारेच्छा से वह जब भी साध्य होत, तो सूरज को निगलने का प्रयत्न करता था। अमृत-पान से वंचित राहु-राक्षस द्वारा हर साल सूरज के निगलने के इस दृग्विषय को मानव ''सूर्य-ग्रहण'' नाम से पुकारते हैं!!

सप्ताश्वरथमारूढ़म्

हमारे पुराणों में कहा गया है कि सूर्यभगवान् सात घोड़ों वाले रथ पर आसीन हो कर उदयगिरि से अस्ताद्रि तक यान करता है।

सप्ताश्व रथमारूढं प्रचंडं कश्यकात्मजम् ।
श्वेतपद्म धरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।

''सूर्यदेव सात घोंडों वाले रथ पर विराजमान हो कर विचरता है। वह प्रचडं है, अर्थात् तेज रश्मी बिखरने वाला है। सूरज कश्यपप्रजापति का पुत्र है। हाथ में सफेद कमल को धारण करने वाले ऐसे सूर्य (सूर) की मैं वंदना करता हूँ।''

सूर्यदेव ''सात घोड़ों'' वाले रथ पर बैठे आसमान में विचरता है!! यह बात, यह तथ्य हजारों सालों पहले भारतीय दार्शनिकों अथवा तत्त्ववेन्ताओं ने स्थापित कर दिया था। सूरज के रथ के सात घोड़े होते हैं। सूरज की कांति सफेद होती है, मगर उस सफेद कांति में सात विभिन्न रंग निक्षिप्त हुए होते हैं!

वे सात वर्ण हैं - VIBGYOR

1) V - VIOLET, वयोलेट
2) I - INDIGO, बैंगनी
3) B - BLUE, नीला
4) G - GREEN, हरा
5) Y - YELLOW, पीला
6) O - ORANGE, नारंगी
7) R - RED, लाल

उपरोक्त सात वर्ण ही सूर्य के रथ के साथ घोड़े हैं, जिन्हें आधुनिक वैज्ञानिकों ने खोज निकाला है! इस तथ्य को भारतीय दार्शनि कों ने हजारों साल पहले ही जान करके, शाश्वित ढंग से जनमानस के हृदय-पटल पर श्लोकी-करण कर दिया है!!

तिरुमल गिरियों पर रथ-सप्तमी महापर्व

रथ-सप्तिमी महापर्व वास्तव में ''सूर्यभगवान् का वर्ष-गाँठ'' है। सूरजने देवताओं के माता-पिता अदिती-कश्यप-दम्पतियों में माघ-शुद्ध सप्तमी-कृत्तिका नक्षत्र के शुभ मुहूर्त पर जन्म लिया था।

इस पावन पर्व के शुभ अवसर पर पवित्र तिरुमल-गिरियों पर विशेष उत्सव वैभवपूर्ण ढंग से मनाये जाते

हैं। मलयप्पास्वामी श्रीवेंकटेश्वर अपनी प्रिय देवेरियों-श्रीदेवी, भूदेवियों, से मिल कर, आनंदनिलय के चार माडावीथियों में अपने सूर्यप्रभ, चन्द्रप्रभ, मोती-छप्पर आदि सात वाहनों पर अत्यंत कोलाहल-संपन्न ढंग से विचरते हैं। पूरे दिन-भर श्रीस्वामी की वाहन-सेवाएँ एक के बाद एक संपन्न होती हैं।

रथ-सप्तमी पावन पर्व पर सप्तगिरि-वैकुंठधाम के वैभव का वर्णन किये न बनता है! उस दिन पहाड़ पर एक लाख से अधिक भक्त कोलहलपूर्ण विधि से गोविंद-नाम-स्मरण करते हुए श्रीस्वामी के वाहनों के पीछे महा समुंदर की लहरो की तरह चलते हुए वैभव बढाते फिरते हैं!!

तिरुमल-तिरुपति देवस्थानों के अधिनेता उस दिन पधारते अशेष भक्तजनों के लिए विशेष सुविधाओं का आयोजन करके, उस दिन को महान् यादगार स्मृति के रुप में मनाते हैं! वास्तव में तिुरमलगिरियों पर १९, फरवरी के पावन दिन पर मनाये जाने वाला ''रथ-सप्तमी'' एक दिन का श्रीबालाजी महराज का ''ब्रह्मोत्सव'' है, जो इस धरा-पटल पर मनाये जाने वाले उत्सवों में एक विराट् तथा बृहत् उत्सव है!!

अस्तु! मंगलम् महत्!

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

तिरुक्कच्चिनम्बि यानी काञ्चीपूर्ण स्वामीजी

- श्रीमती अजाय कुमार. सरफ
मोबाइल - ९८४४००९४५०

तिरुनक्षत्र : मृगशिर नक्षत्र

अवतार स्थल : पूविरुन्तवल्लि

आचार्य : आळवन्दार

परमपद स्थल : पूविरुन्तवल्लि

ग्रंथरचना सूचि : देवराजाष्टकम्

तिरुक्कच्चि स्वामीजी कांचीपूर्ण स्वामी जी के नाम से प्रसिद्ध है। कांचीपुरी में शबरी के अंश से चतुर्थवर्ण में उत्पन्न कांचीपूर्णस्वामीजी थे। वे एक वैश्य परिवार से थे, इनके पिता जी का नाम वीरराघवन, माताजी का नाम कमलम्मा था। इनके चार पुत्रों में कांचीपूर्ण स्वामीजी सबसे छोटे थे। इनका जन्म पूविरुन्तवल्लि में हुआ था। जो कि वर्तमान में चेन्नई में है। कहते है कि अपने पिता से प्राप्त संपत्ति इन्होंने भगवान की सेवा में लगा दी थी। वैराग्य जागने से इन्होंने श्रीरंगम् जाकर आळवन्दार स्वामीजी से दीक्षा लेकर भगवान श्री रंगनाथजी की पंखी से हवा देने की सेवा करना प्रारंभ की।

वरदराजभगवान की विशेषकृपा

एकबार रामानुजाचार्य स्वामीजी को एक घने जंगल में व्याध दम्पत्ति के रूप में भगवान मिले। व्याध दम्पति को देखकर रामानुजाचार्य ने पूछा आप कौन है? कैसे इधर आये? कहाँ जा रहे है? भगवान रामानुजाचार्य की वाणी सुनकर व्याध वेषधारी भगवान बोले मैं सत्यवती क्षेत्र जा रहा हूँ, आप कैसे इस निर्जन हिंसक पशुओं से भरे हुए घनघोर जंगल में घूम रहे है? तब रामानुजाचार्य बोले मैं अपने गुरु के साथ गंगा स्नानार्थ प्रयाग जा रहा था। किंतु कुछ कारण वश यहाँ रुक गया। अब कांची जाना चाहता हूँ। किन्तु मैं अकेला और असहाय हूँ। मेरा कोई साथी नहीं है। भगवानर रामानुजाचार्य की वाणी सुनकर करुणा सागर भगवान ने उन्हें अपने साथ लेकर कांची के लिए प्रस्थान किया। उसी रात को रामानुजाचार्य के साथ जब व्याध दम्पति सो रहे थे, तब व्याध पत्नी को प्यास लगी। श्रीरामानुजाचार्य बोले सम्प्रति में आप लोगों को जल प्रदान करने में मैं अक्षम हूँ। किन्तु प्रातःकाल होते ही मैं आप लोगों को उत्तम जल प्रदान करूँगा। सवेरा होते ही व्याधरूपधारी भगवान बोले पास में ही जल है। अंजूलि में भरकर हमें आप जल दे। तब रामानुजाचार्य तीन अंजूलि जल देकर जब चौथी बार जल उठाये तो व्याध दम्पत्ति वहाँ नहीं थे। और तभी रामानुचाजार्य कांचीपुरी के निकट पहुँच गए थे। तब आश्चर्य चकित श्री रामानुजाचार्य ने अनुमान लगाया कि यह भगवान वरदराज का ही प्रभाव है। फिर रामानुजाचार्य ने यह वृत्तान्त कांचीपूर्ण स्वामीजी को

सुनाया, तब वे बोले भगवान वरदराज की आप पर अत्यंत कृपा है इसलिए उन्होंने आप को आपत्ति से बचाया है और आप के हाथों से जल पीनेकी इच्छा व्यक्त की। इसलिए आप नित्य ही उस कुएँ से जल लाकर भगवान वरद राज जी को समर्पित कीजिए।

उनकी आज्ञानुसार रामानुजाचार्य प्रतिदिन उसी कुएँ (शालकूप) से जल लाकर वरदराज भगवान को समर्पित करने लगे और पंखी से हवा देने की सेवा करने लगे। सेवा के समय कांचीपूर्ण स्वामी जी भगवान वरदराज जी से वार्तालाप करते थे।

शालकूप के दर्शन आज भी वहाँ होते हैं।

तरीप्रसाद का महत्व

एकबार रामानुजाचार्य कांचीपूर्ण स्वामीजी के तरीप्रसाद की अभिलाषा से उन्हे अपने यहाँ प्रसाद पाने के लिये आग्रह किये। कांचीपूर्ण स्वामीजी ने निमंत्रण स्वीकार किया। रामानुजाचार्य घर पर नही थे। तभी कांचीपूर्ण स्वामीजी आये और रामानुजाचार्य की पत्नी श्रीमति रक्षकाम्बा को विनती करके जल्दी प्रसाद पाकर चले गये।

श्रीमति रक्षकाम्बा बचा हुआा भोजन नौकर को देकर पुनः स्नान करके रामानुजाचार्य के लिए दूसरा भोजन बनाने लगी। रामानुजाचार्य आये और उन्हें पता चला की रक्षकाम्बा ने कांचीपूर्ण स्वामीजी के शुद्र वर्ण को देखकर ऐसा किया तो वे अतिदुःखी हुए। क्यों कि उन्हें कांचीपूर्ण स्वामीजी का तरीप्रसाद नहीं मिला। उस दिन से रामानुजाचार्य ने अपनी पत्नी का त्याग कर दिया। रामानुजाचार्य कांचीपूर्ण स्वामीजी के पास जाकर निवेदन किये की वे उन्हें पंचसंस्कारित करे याने अपना शिष्य बना ले। जिसे कांचीपूर्ण स्वामीजी ने अपने वर्ण के कारण अस्वीकार किया।

तब रामानुजाचार्य ने काञ्चीपूर्ण स्वामीजी को ४ प्रश्न पूछे -

१) उज्जीवन के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है?

२) अन्तिम समय में भगवत् स्मरण आवश्यक है कि नहीं?

३) मोक्ष प्राप्ति कब होती है?

४) मैं किन आचार्य का समाश्रयम करुँ?

काञ्चीपूर्ण स्वामीजी ने एकान्त में पंखीसेवा करते हुए वरदराज भगवान से ये प्रश्न पूछने पर भगवान ने उत्तर दियाः

१) मैं ही परम तत्व और जगत के कारणों का कारण हूँ।

२) जीव और ईश्वर में भेद सिद्ध है।

३) मोक्ष के लिये भगवत् शरणागति सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

४) मुझे अपने (शरणागत) भक्तों से अन्तिम स्मृति की अपेक्षा नही।

५) देह त्याग करने पर मैं अपने (शरणागत) भक्तों को परमपद देता ही हूँ।

६) श्री रामानुजाचार्य श्री महापुर्णाचार्य स्वामीजी का समाश्रयण करें।

काञ्चीपूर्ण स्वामीजी के मुख से श्री वरदराज भगवान की छः वाक्य आज्ञा सुनकर प्रसन्न रामानुजाचार्य तुरन्त श्री महापुर्णाचार्य स्वामीजी द्वारा पञ्चसंस्कार ग्रहण करने की ईच्छा से श्रीरंगम के लिये प्रयाण किये।

श्री गोविंदराजस्वामीजी का प्लवोत्सव

- डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी
मोबाइल - ९७०३०३५१५१

श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर तिरुपति के महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। यह वैष्णव समुदाय की पारंपरिक वास्तु विधि से बनाया गया है। इस मंदिर के निर्माण में यह कहा जाता है कि वैष्णव संत रामानुज ने १२३५ में इस मंदिर के नींव के पत्थर की स्थापना की थी। गोपुरम के अलावा दो अन्य प्रमुख मंदिर हैं। जिनकी बाहरी दीवार एक है। दक्षिण की ओर के मंदिर में भगवान श्री पार्थसारधी की मूर्ति है जब कि उत्तर की ओर के मंदिर की मूर्ति को गोविंदराज कहा जाता है। उस मंदिर के परिसर को अन्य कई मंदिर जैसे श्री श्री मानवाला मामुनी, श्री चक्रथाल्वार, गोदादेवी, रामानुज, तिरुमंग आल्वार आदि प्रमुख मंदिर हैं।

ऐसा कहा जाता है कि चिदम्बर में गोविन्द राजू पेरुमाल मंदिर पर आक्रमण के दौरान तिरुपति मूर्ति जुलुस देवता को सुरक्षित रखने के लिए तिरुपति लाया गया था। आक्रमणों के बाद उत्सव मूर्ति को वापस ले लिया गया। हालाँकी मंदिर के अंदर संरचनाएँ है जो ९वीं और १०वीं शताद्बि की है। गोविन्दराज स्वामी को देवता के रूप में अभिषेक करने से पहले श्री पार्थसारधी स्वामी के मंदिर के अध्यक्ष देवता थे। तिरुमल पहाडियों के तल के गाँव कोट्टुरु को श्री गोविन्दराज स्वामी मंदिर के आस पास के इलाके ने स्थानंतरित कर दिया गया था जो बाद ने तिरुपति शहर में दुबारा, मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। जिने गोविन्दराज स्वामी के रूप में संदर्शित किया जाता है। देवता यो निद्र आसन में पूर्व की ओर दहिने हाथ अपने सिर के नीचे और बहिने हाथ को अपने शरीर पर सीधा रखे हुए है। श्रीदेवी और भूदेवी विष्णु के रुप से गोविन्दराज के चरणों में विराजमान होती है। गोविन्दराज तीर्थ प्रतिष्ठ से पहले श्री पार्थसारधी स्वामी मंदिर के प्राथमिक देवता

थे, मंदिर आंध्रप्रदेश के विशाल मंदिर परिसरों में से एक है।

प्लवोत्सव को तमिल में थिरुपल्ली वोडम और संस्कृत में प्लवोत्सवम के नाम से भी जाना जाता है। पल्लि का अर्थ है बिस्तर या शयनम ओडम माने जल जहाज। इस जल जहाज पर स्वामी आसीन होकर कोनेरु में जल विहार करते हैं। इस प्लवोत्सव कार्यक्रम में कई लौकिक आध्यत्मिक रहस्य है। बेडा पार करने का एक साधन है। उस पर बैठा आदमी है। यहाँ भक्ति का मूल भाव है। इस दरार में, एक जीवित प्राणी रसातल और पापी, जलाशय को पार कर सकता है।

श्री गोविदंराज स्वामी प्लवोत्सव सात दिनों तक सबसे शानदार तरीके से मनाया जाएगा, गोविंदपुष्करिणी विभिन्न रंगों के रंगीन लालटेन से सजे है। माघ मास के शुद्ध एकादशी के दिन प्रारंभ होकर हर रोज सायंकाल प्लवोत्सव मनाया जाता है। प्लवोत्सव को गोविंद पुष्करिणी में नियमित रुप से आयोजित किया जाता है।

पहले दिन श्री कोदंड रामस्वामी जी का प्लवोत्सव बडे वैभव के साथ प्रारंभ होता है। उस दिन सुबह ९.३० बजे से स्वामी जी की अनेक पूजाएँ निर्वहित किया जाता है। शाम ५ बजे श्री सीतारामलक्ष्मण उत्सव में भाग लेते हुए श्री गोविंदराज पुष्करिणी के पास पहुँचते है। इस प्लवोत्सव में स्वामी सीता लक्ष्मण समेत बेडा वाहन में विराजमान होकर जलविहार करते है। पहला चक्कर पूरा होते ही भक्तजन जो तिरुमल जाकर श्री वेंकटेश्वर स्वामी का दर्शन करते है वे नीचे उतर कर श्री गोविन्दराज स्वामी का दर्शन करते है। हर रोज यहाँ कई भक्तों का आना

जाना रहता है। वैदिक विद्वान वेदों का पाठ करते हैं और हारती देते हैं। इस तरह दूसरा तीसरा चक्कर मंगल वाद्ययंत्र के साथ वेद मंत्रो के साथ स्वामी भक्तजन को दर्शन देते हैं।

प्लवोत्सव के दूसरे दिन पार्थसारधि अपने दोनों पत्नियों श्रीदेवी और भूदेवी समेत प्लवोत्सव में भ्रमण करते हुए भक्तों को दर्शन देकर आशीर्वाद देते हैं। यह मंदिर गोविंदराज स्वामी के दाये ओर स्थित है। तीसरे दिन श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी श्रीदेवी, भूदेवी के साथ पुष्करिणी में उभयदेवेरुओं के साथ भगवान श्री गोविंदराज स्वामी के दाये ओर विराजमान हुए हैं। तीसरे दिन भगवान पुष्करिणी में ५ बार भ्रमण करते हैं।

प्लवोत्सव के चौथा दिन आंडाल अम्माजी और कृष्ण स्वामीजी को सुबह से कई सेवा कार्यक्रम होने के अनंतर शाम को पुष्करिणी में आंडाल अम्मवारी को और कृष्ण स्वामी का जल विहार अत्यंत शोभानुमय रुप से किया जाता है। अनेक प्रकार के दीपों, फूलों और तोरणो से बहुत सुंदर रुप से बेडा का अलंकार किया जाता है। वेद मंत्र, मंगल वाद्ययंत्र के साथ आंडाल अम्मा और श्रीकृष्ण स्वामी बेडा पर विराजमान होकर भक्त जनों को आर्शिवाद देते हुए सभी को प्रसन्न करते हैं।

पांचवाँ दिन से सातवाँ दिन तक श्री गोविन्दराज स्वामी को सुबह नित्य पुजाएँ होने के बाद श्रीदेवी भूदेवी समेत गोविन्दराज स्वामी को स्वर्णाभरण और

रूक्मिणी सत्यभामा सहित
श्रीपार्थसारधी स्वामी

विविध प्रकार के पुष्पों से अलंकृत किया जाता है। शाम पुष्करिणि पहुँचकर जल जहाज पर विराजित होकर जल विहार श्रीदेवी भूदेवी समेत गोविन्दराज स्वामी सभी भक्तजनों के मनोकामनाओं की पूर्ति करने का वर देते हुए भक्तों को दर्शन देते हैं। प्लवोत्सव के इस मह उत्सव में भाग लेने के लिए भक्त जन पुष्करिणी के चारों तरफ के सीढीयों के ऊपर बैठकर स्वामी के दर्शन करते हैं।

श्री गोविन्दराज स्वामी की पूजा होने के बाद सायंकाल श्रीवारी उभयदेवेरु समेत पुष्करिणी में बेडा पर विराजित वेदमंत्रो के साथ मंगल वाद्ययंत्र के साथ पाँच बार पुष्करिणी में विहरति होते है। भक्त जन स्वामी के दर्शन प्राप्त कर तनमय होते हैं। उनका मन आनंद से पुलकित होता है। स्वामी सभी भक्त जनों के आँखों में आनंद भर कर प्लवोत्सव के बाद फिर अपने सन्निधि चले जाते हैं।

प्लवोत्सव के अंतिम दिन है। इस दिन भी सुबह स्वामी जी की पूजा बडी श्रद्धा और भक्ति के साथ किया जाता है। श्री गोविन्दराज स्वामी श्रीदेवी और भूदेवी के लिए दैनिक सुबह की रस्मे समाप्त होने के बाद शाम ६.३० बजे शादी मंडम में आंजनेयस्वामी के सामने विराजित होकर तदनंतर स्वामी जी पुष्करिणी पहुँचते हैं, सात प्रदक्षण पुष्करिणी में करते हुए भक्तों को दर्शन देते है। हर एक प्रदक्षण के अंत हारति की जाती है। फिर स्वामी जी बडे उत्सव में शामिल होकर वापस अपने सन्निधि पहुँचते हैं।

प्लवोत्सव के उत्सव में जो भक्त जन शामिल होकर भगवान का दर्शन करते है उनके मन में स्वामी विराजमान होकर विहरण करते है। सभी भक्त जन जो पुष्करिणी के चारों तरफ के सीढीयों के ऊपर बैठकर प्लवोत्सव में भाग लेते है उनका जन्म धन्य हो जाता है।

भीष्माचार्य - व्यक्तित्व के धनी

- डॉ.के.एम.भवानी
मोबाइल - ९९४९३८०२४६

महाभारत की कहानी में कौरव पांडव और श्रीकृष्ण के साथ-साथ उतना ही महत्वपूर्ण चरित्र भीष्म पितामह का है। महान मानवीय मूल्यों की खान भीष्म पितामह का चरित्र सारी मानव जाति के लिए अनुसरण योग्य है। मानव जाति का उद्धार के लिए ''श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र'' को उपहार के रुप में दिया, महान आचार्य भीष्म पितामह है। 'भगवत्गीता' खुद भगवान से दिया गया उपदेश है तो ''विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र'' भगवान के सामने किया गया स्तोत्र है। कलियुग में मानव अपने सीमित जीवन काल में खुद के उद्धार के लिए सालों तक न ही तप कर सकता है न यज्ञ। इसीलिए सारी मानव जाति के उद्धार के लिए नाम-जप के रुप में भीष्म से दिया गया अद्भुत वरदान विष्णु सहस्र नाम स्तोत्र से बढ़कर सरल मोक्ष मार्ग दूसरा कोई नहीं है।

'देवव्रत' ''भीष्म'' बना कैसे :- कुरु वंश के महान सम्राट शांतनु और गंगा (नदी) भीष्म के माता-पिता हैं। शाप ग्रस्त अष्ट वसुओं को शाप मुक्ति दिलाने के लिए गंगा अपने पुत्रों के रुप में जनमे उन्हें पैदा होते ही पानी में बहा देती है। सात पुत्रों के मौत को ऐसे ही मौन देखता रहा शांतनु आठवे पुत्र को ऐसा करते देख नहीं पाया। गंगा को ऐसा करते रोक दिया। अपने किसी काम को रोकने पर छोड़कर चले जाने की शर्त पर ही राजा से शादी के लिए मान लिया गंगा तुरंत अपने पुत्र को लेकर चली जाती है। 'देवव्रत' नाम से उसे पाल-पोसकर महान योद्धा बनाकर राजा शांतनु के पास आकर उसे सौंप देती है। बचपन में माँ के लाड़-प्यार में पला देवव्रत यौवनावस्था में पिता शांतनु के पास पहुँचता है।

कुछ समय से पिता को चिंताग्रस्त रहना देवव्रत समझकर कारण जानना चाहता है तो उसे मालूम हो जाता है कि पिता सत्यवती नामक स्त्री से विवाह करना चाहता है तो उसके पिता सत्यवती के संतान को राज्य का वारिस बनाने की शर्त से ही शादी के लिए राजी होने को तैयार है लेकिन शांतनु सभी तरह से योग्य बड़े पुत्र 'गांगेय' (गंगा का पुत्र) को छोड़कर दूसरे पुत्र को उत्तराधिकारी बनाने के लिए राजी नहीं है इसीलिए शांतनु चिंता में डूब गए। वह न तो देवव्रत को हानि पहुँचा सकता है और न ही सत्यवती को छोड़ सकता है। तब गांगेय सत्यवती के पिता के पास जाकर बताता है कि वह पिता की खुशी के लिए राज्य पर अपना हक छोड़ने को तैयार है लेकिन सत्यवती के पिता और एक समस्या को निकालता है कि वह अपने पोतों को वंशज ही राज्य के लगातार वारिस बनना चाहता है। राज्य पर अपना हक छोड़ने के लिए देवव्रत राजी होने पर भी उसके वारिस फिर से राज्याधिकारी बनना चाहते हैं तो सत्यवती के पौत्रों को राज्याधिकार छोड़ना पडेगा। इस समस्या के समाधान के रूप में देवव्रत भीषण प्रतिज्ञा करता है कि वह आजीवन ब्रह्मचारी रहेगा। पंचभूतों को साक्षी बनाकर इतना भीषण प्रतिज्ञा करने के कारण तब से देवव्रत ''भीष्म'' कहलाया गया।

अटूट संकल्प :- जिंदगी में विषम स्थितियों का सामना करने पर भी भीष्म अपनी प्रतिज्ञा से तनिक भी नहीं हिला। कुरु वंश का संरक्षक बनकर एक ईमानदार रक्षक की भाँति राज्य क्षेम के लिए ही जिंदगी भर सोचता रहा। माता सत्यवती स्थिति को नजर में रखकर प्रतिज्ञा छोड़कर उसे शादी करने के लिए प्रेरित करने पर भी भीष्म अपनी बात पर अटल रहा। इसी कोशिश में उसे अपने गुरु 'परशुराम' से भी लड़ना पड़ा। तब भी वह निश्चल रहा।

''इच्छा मरण वर'' :- शायद भगवान की सृष्टि में भीष्म ही ऐसा मानव है जिसे 'इच्छा मरण' का वर है। विधाता ही सबका आयु निर्धारित करके उसे मृत्यु देता है लेकिन अपने लिए भीषण प्रतिज्ञा करके भीष्म बना पुत्र देवव्रत को शांतनु ने ऐसा वर दिया जिसे विधाता को भी मानना पड़ा। वह वर था - भीष्म जब चाहता है तभी उसकी मौत आएगी। इस तरह भीष्म इच्छा मरण को पाकर भी अपनी बात और जिम्मेदारी को निभाते हुए कुरुवंश में स्थिरता आने तक इंतजार करके तभी देह त्यागा।

कुरु राज्य संरक्षक :- सत्यवती के पुत्रों का संरक्षक बनकर रहने का वचन दिया भीष्म को इसके पालन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सत्यवती के दोनों पुत्र विचित्र-वीर्य और चित्रांगद जल्दी ही चल बसे, कुरु वंश के उत्तराधिकारी के रुप में जन्मा धृतराष्ट्र जन्मांध रहा तो पांडु महान योद्धा होने पर भी रोग ग्रस्त रहा। राज्य पालन करते-करते पांडु कारणवंश शापग्रस्त हो गए और चले बसे। धृतराष्ट्र के संतान, पांडु के पाँच पुत्र छोटे बच्चे होने के कारण फिर से राज्य की पूरी जिम्मेदारी धृतराष्ट्र के नाम पर भीष्म को ही निभाना पड़ा। धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव कहलाए गए तो पांडु के पुत्र पांडव। बचपन से ही दुष्ट स्वभाव वाले कौरवों के कारण पांडवों को कई विषम स्थितियों का सामना करना पड़ा। दोनों भाइयों के बीच में मित्रता लाने के लिए, राज्य में शांति के लिए भीष्म अथक प्रयास किया लेकिन अंत में कुरुक्षेत्र युद्ध होकर ही रहा। कौरवों का पराजय, सज्जन पांडवों की जीत, युधिष्ठिर का राजतिलक, राज्य में स्थिरता, शांति-स्थापना के बाद भीष्म अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर चल बसे।

भीष्माष्टमी :- दक्षिणायण में शरशय्या पर रहने पर भी इच्छा मरण वर के कारण भीष्म उत्तरायण तक इंतजार

करके माघ मास के शुक्ल पक्ष के अष्टमी के दिन स्वर्ग सिधारे।

'भीष्म एकादशी' कैसे :- भीष्म एक महान योद्धा ही नहीं श्रीकृष्ण का परम भक्त भी है। धर्मात्मा भी है इसीलिए उसके निष्क्रमण के पहले श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को ज्ञानोपदेश और धर्मोपदेश के लिए भीष्म के पास भेजा तो भीष्म ने उसे सभी प्रकार के धर्मोपदेश किया। इसी सिलसिले में विष्णु सहस्रनाम स्त्रोत को मानव जगत के लिए भंडार के रुप में दिया। भीष्म के महान व्यक्तित्व, धर्म परायणता, अनन्य भक्ति आदि से भगवान श्रीकृष्ण इतने प्रसन्न हो गए कि भीष्म के निष्क्रमण के बाद चौथे दिन पांडवों के साथ-साथ जितने भी पुरुष जिंदा बचे थे, सभी से भीष्म को तिलांजली दिलवा दिया। उस दिन से लेकर दुनिया में यह रिवाज बन गया कि हर साल माघ शुक्ल एकादशी के दिन 'भीष्म एकादशी' के नाम से लोग भीष्म को अंजली अर्पण करते हैं। भगवान विष्णु को एकादशी तिथि बहुत प्रिय है। अपने प्रिय एकादशी को अपने महान भक्त भीष्म के नाम से पुकारने का वर देना भक्तों के प्रति भगवान के प्यार का उदाहरण है तो अपनी भक्ति से भगवान को प्रसन्न किया भीष्म का पवित्र जीवन मानव जाति के लिए आदर्श है।

'भीष्म शरशय्या पर क्यों? :- इतना महान धर्मात्मा भीष्म को पचास से ज्यादा दिन शरशय्या पर क्यों रहना पड़ा? इसके पीछे भी धर्म ही है। शरशय्या पर से भीष्म युधिष्ठिर को धर्मोपदेश करते समय द्रौपदी हँसकर पूछती है कि इतना धर्मोपदेश बतानेवाले आप जब भरी सभा में घर की बहू का अपमान करते समय चुप क्यों रहे? इसके समाधान के रुप में भीष्म कहता है कि कुरु वंश के राजा का संरक्षक बनकर रहने का वचनबद्ध होने के कारण वह राजा की आज्ञा के सामने कुछ न कर सका। कौरवों का नमक खाने के कारण जान बूझकर अधर्म के पक्ष में खड़े होकर धर्म के विरुद्ध लड़ना पड़ा। इसी पाप को धोकर पवित्रात्मा के साथ-साथ पवित्र देह धारी बनने के लिए ही शरशय्या पर पड़ा रहा। बाणों के चुभन को सहता रहा। अंत में उत्तरायण के आते ही स्वर्ग पहुँचे।

जन्म से ही नहीं, पुत्र प्रेम से भी अंधा बना धृतराष्ट्र, घमंड से किसीकी बात न सुननेवाला दुर्योधन, बिना किसी सोच के भाई के आदेशों का पालन करनेवाले दुशासन जैसे सौ भाई, हमेशा भानजों को बुरे रास्ते पर चलाने के लिए तैयार शकुनि, मैत्री बंधन में खुद को जकड़कर गलत राह को चुना कर्ण- इन सभी के बीच में रहते हुए धर्म मार्ग पर अडिग चल पाना आसान बात नहीं है लेकिन भीष्म इस असाध्य को भी साध्य करके दिखाया। इतना ही नहीं भीष्म कई असाध्य कामों को साध्य किया। इस में एक है- कृष्ण से हथियार पकड़वाना। कुरुक्षेत्र युद्ध के पहले श्रीकृष्ण प्रतिज्ञा करता है कि वह सिर्फ अर्जुन का सारथी बनकर रहेगा लेकिन हथियार पकड़कर युद्ध नहीं करेगा। मगर एक दिन भीष्म के महान पराक्रम से विवश होकर अर्जुन अचेत हो जाता है तो कृष्ण से रहा नहीं जाता है। हथियार लेकर भीष्म को मारने दौड़ पडता हैं तो भीष्म रथ से उतर कर भगवान कृष्ण को प्रणाम करके खड़ा हो जाता है। इतने महान योद्धा कुरुक्षेत्र में रोज कम से कम दस हजार लोगों को मारते रहने पर, पांडव जीत पर आशा छोड़ कर मदद के लिए भीष्म के पास पहुँच कर उस से ही उस को रोकने का उपाय पूछते है तो महान भीष्म इच्छा मरण वरवाला होने के कारण खुद अपने को रोकने का उपाय पांडवों को बता देता है। यह भीष्ण के बिना कोई नहीं कर सकता है। इसीलिए भीष्म को याद करके उसके दिखाए धर्म मार्ग पर चलना हर एक मानव की जिम्मदारी है।

देवुनि कडपा

श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२०२१ फरवरी
१३ से २१ तक

१२-०२-२०२१ शुक्रवार
दिन - दीक्षा, तिरुमंजनं
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

१३-०२-२०२१ शनिवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण
रात - चंद्रप्रभावाहन

१४-०२-२०२१ रविवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - महाशेषवाहन

१५-०२-२०२१ सोमवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - सिंहवाहन

१६-०२-२०२१ मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - हनुमद्वाहन

१७-०२-२०२१ बुधवार
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - गरुडवाहन

१८-०२-२०२१ गुरुवार
दिन - कल्याणोत्सव
रात - गजवाहन

१९-०२-२०२१ शुक्रवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - धूळी उत्सव

२०-०२-२०२१ शनिवार
दिन - सर्वभूपालवाहन
रात - अश्ववाहन

२१-०२-२०२१ रविवार
दिन - वसंतोत्सव, चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण, हंसवाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्रीनिवासमंगापुरम

श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२०२१ मार्च
०२ से १० तक

०१-०३-२०२१ सोमवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

०२-०३-२०२१ मंगलवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

०३-०३-२०२१ बुधवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

०४-०३-२०२१ गुरुवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

०५-०३-२०२१ शुक्रवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

०६-०३-२०२१ शनिवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

०७-०३-२०२१ रविवार
दिन - हनुमद्वाहन
रात - गजवाहन

०८-०३-२०२१ सोमवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

०९-०३-२०२१ मंगलवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

१०-०३-२०२१ बुधवार
दिन - पल्लकी उत्सव, तिरुच्चि उत्सव, चक्रस्नान,
रात - ध्वजावरोहण.

तिरुपति

श्रीकपिलेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव

२०२१ मार्च
०४ से १३ तक

०३-०३-२०२१ बुधवार
रात - मूषिकवाहन पर गणेश
अंकुरार्पण

०४-०३-२०२१ गुरुवार
दिन - पल्लकी उत्सव ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

०५-०३-२०२१ शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

०६-०३-२०२१ शनिवार
दिन - भूतवाहन
रात - सिंहवाहन

०७-०३-२०२१ रविवार
दिन - मकरवाहन
रात - शेषवाहन

०८-०३-२०२१ सोमवार
दिन - अधिकारनंदिवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव

०९-०३-२०२१ मंगलवार
दिन - व्याघ्रवाहन
रात - गजवाहन

१०-०३-२०२१ बुधवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव

११-०३-२०२१ गुरुवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - नंदिवाहन (महाशिवरात्रि)

१२-०३-२०२१ शुक्रवार
दिन - पुरुषामृगवाहन
रात - कल्याणोत्सव अश्ववाहन

१३-०३-२०२१ शनिवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन पर नटराजस्वामी, त्रिशूलस्नान
रात - ध्वजावरोहण, रावणासुर वाहन

तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२०२१ मार्च
१३ से २१ तक

१२-०३-२०२१ शुक्रवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

१३-०३-२०२१ शनिवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

१४-०३-२०२१ रविवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

१५-०३-२०२१ सोमवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

१६-०३-२०२१ मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

१७-०३-२०२१ बुधवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

१८-०३-२०२१ गुरुवार
दिन - हनुमद्वाहन
शाम - वसंतोत्सव, रात - गजवाहन

१९-०३-२०२१ शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

२०-०३-२०२१ शनिवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

२१-०३-२०२१ रविवार
दिन - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

श्रीकृष्णकर्णामृतम् एक अवलोकन

- डॉ.क्रे सुधाकर राव
मोबाइल - ७३८२६१२९१३

श्रीकृष्णकर्णामृतम् भक्तिरसपूर्ण एक काव्य है। इस श्रृङ्गरमय काव्य का लेखक बिल्वमंगल है। इतिहासकारों का कहना है कि बिल्वमंगल कवि सन् १२६८ -१३६९ के स्वामी देशिक के समकालीन थे। इस कवि ने सुन्दर सुमधुर श्लोकों से पूर्ण ''श्रीकृष्णकर्णामृतम्'' काव्य की रचना की। इस काव्य में कुल ३२८ श्लोक हैं। बिल्वमंगल ही कुछ सालों बाद लीलाशुकयोगी बन गये। लीलाशुक के सुमधुर काव्य का विश्लेषण आगे की पंक्तियों मे किया जा रहा है। निम्नलिखित श्लोक में 'स्त' शब्द की पुनरावृत्ति अत्यंत रोचक ढंग से की गई है।

अस्ति स्वस्तरुणीकराग्रविलसत्कल्पप्रसूनाप्लुतम

वस्तु प्रस्तुतवेणुनादलहरीनिर्वाणनिर्व्याकुिलम्

स्त्रस्त स्त्रस्त निरुद्व नीविविलसद्गोपी सहस्त्रावृतम्

हस्त न्यस्तनतापवर्गमखिलोदारं किशोराकृतिः (१-२)

अप्साराओं के सुन्दरहाथों में विद्यमान कल्पवृक्ष के फूलों से भरा हुआ, निरंतर प्रचलित वेणुनाद के लहर में अलौकिक आनंद को प्राप्त करता हुआ, बार बार फिसलती हुई नीवियों को पकडती हुई हजारों गोप वनिताओं से घिरा हुआ, नमस्कार करनेवाले लोगों को मोक्ष प्रदान करने वाला कोई किशोर, अत्यंत उदारतापूर्ण व्यक्तित्व विराजमान है।

गोवर्धनपर्वत को अपनी कनिष्ठिका से उठाकर सारे ब्रजनारियों की, पुरुषों की रक्षा की श्रीकृष्ण ने। इन्द्र के घमंड का नाश किया। राधा ने श्रीकृष्ण की स्तुति की। इस प्रकार कृष्ण लीलाओं का सुन्दर वर्णन श्रीकृष्णकर्णामृत में देखने को मिलता है।

बालक तो मासूम होते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण भी बालक के रुप में विराजमान है। निम्नलिखित श्लोक में भक्त कवि लीलाशुक ने कृष्ण की मासूमियत का चेतोहारि वर्णन किया है।

मातः किं यदुनाथ देहि चषकं किं तेन पातुं पयः
तन्नास्त्यद्य कदास्ति वा निशि निशा का वांधकारोदये।
आमील्याक्षियुगं निशाप्युपगतादेहीति मातुर्मुहुः
वक्षोजांवर कर्षणोथतकरः कृष्णः स पुष्णातु नः।। (२-६०)

इस श्लोक में यशोदा एवं कृष्ण के बीच में हुए संवाद का वर्णन सुंदर है। कृष्ण बोले - ''माँ!'' यशोदा बोली क्या कृष्ण!'' कृष्ण बोले - ''मुझे एक कटोरी देदो''। यशोदा ने कहा- ''क्यों?'' कृष्ण ने बोला- ''दूध पीने के लिए'' माता ने कहा ''अभी नहीं'' कृष्ण बोले ''कब''? माता बोली - ''रात को''। कृष्ण ने कहा - ''रात क्या है?'' माता ने जवाब दिया - ''अंधेरा होने पर रात होती है।'' तब कृष्ण ने दोनों आँखे बंद कर कहा - ''माँ! अब रात आगई! मुझे कटोरी देदे''। इस प्रकार बोलता हुआ अपनी माता की साडी को खींचनेवाला मासूम कृष्ण हम सब की रक्षा करे।

कवि ने, श्रीकृष्णकर्णामृत में, श्रीकृष्ण की एक गज (हाथी) से तुलना की है। हाथी को एक लोहे के सलाके पर बांध देते हैं ताकि वह इधर उधर न घूम सके। इसीप्रकार योगियों का चंचल मन कृष्ण के चिंतन करने पर स्थिर हो

जाता है। गोपिकाओं के स्तनमंडल भी कृष्ण के लिए एक आकर्षण केन्द्र बन गया था। निम्नलिखित श्लोक में इन्ही चीजों का चेतोहारी वर्णन देखने को मिलता है -

उलूखलं वा यमिनां मनो वा
गोपाङ्गनानाम् कुचकुट्मलम् वा।
मुरारिनाम्नः कलभस्य नूनम्
आलानमासीत् त्रयमेव भूमौ।। (२-५७)

कृष्ण नटखट था। इधर-उधर घूमता हुआ माखन चुराता था। इसलिए एक दिन यशोदा ने कृष्ण को एक ऊखल (बडा पत्थर) को रस्सी से बांध दिया, ताकि वह बालक उस जगह से निकल न पाये। किंतु कृष्ण साधारण बालक नहीं था। उसने आगे बढकर उस पत्थर के माध्यम से एक जुडवे वृक्ष को गिरा दिया। उस युगल वृक्ष से दो देवता निकले। शाप से विमुक्ति पाकर कृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर निकल पडे।

''शम्भो स्वागतमास्यताम्'' (२-५९)

श्लोक में कृष्ण के स्वप्न वृत्तांत का वर्णन विद्यमान है। कृष्ण स्वप्न में बडबडाने लगा ''हे शिवजी! आईए! हे विष्णु! आप बाई तरफ वैठिए। षण्मुखजी। खैरियत है न? इन्द्र! कैसे हैं आप? कुबेर! आज कल दिखाई नहीं देते आप? इस प्रकार बडबडाते हुए बाल कृष्ण की बातें सुनकर यशोदा ने कहा - ''कृष्ण! ऊटपटांग बोल रहे हो। तुझे किसी की नजर लगी है। थू थू इस प्रकार बोलने वाली यशोदा की बातें हमारी रक्षा करें''। यह वर्णन कृष्ण के प्रति हमारी भक्ति भावना को जागृत करता हैं।

कृष्ण परमात्मा है। उनका वर्णन करने में वेद भी सक्षम नही है। उनका सौन्दर्य मन्मथ से कई गुना ज्यादा है। व्रजांगनाओं का राजा है कृष्ण! हमेशा हिरण के नयनों के समान चंचल नेत्रों से युक्त व्रजांगनाओं से घिरे हुए श्रीकृष्ण की लीला अनिर्वचनीय है। निम्नलिखित श्लोक में इस सत्य का रोचक वर्णन किया है लीलशुक ने-

एणीशावविलोचनाभिरलसश्रेणीभरप्रौढिमि
वेंणीभूतरसक्रमाभिरभितः श्रेणीकृताभिर्वृतः।
पाणी द्वौ च विनोदयन् रतिपतेस्तूणीशयैः सायकै
र्वाणीनामपदं परं व्रजजनक्षोणीपतिः पातु नः।।
(३-८१)

इस प्रकार शब्दालंकारों के साथ साथ उपमा रूपक जैसे अर्थालंकारां से मंडित श्रीकृष्णकर्णामृत काव्य श्रुगांर एवं भक्ति रूपी गंगा, जमुना का संगम है। इस काव्य में श्रीकृष्ण की महिमाओं का वर्णन किया गया है। इस काव्य के बारे में एक झलक दिखाने का प्रयास मैं ने किया है। विस्तृत रसानंद के लिए श्रोतागण या पाठक श्री कृष्णकर्णामृत काव्य का पाठ कर कृतार्थ बनें।

श्री वेंकटेश सुप्रभात

स्तोत्र रचना - श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामीजी

व्याख्या - श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी

मोबाइल - ९३६४३२४८४४

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः

हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या।

भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रनादं

शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥१२॥

पदार्थ -

पद्मेश मित्र - सूर्य के दोस्त,

शतपत्रगत - कमलके पुष्प को प्राप्त किये,

अलिवर्गाः - भँवरों के समूह,

निज अङ्ग लक्ष्म्या - अपने शरीर की शोभा से,

कुवलयस्य - कुमुदपुष्पों की,

श्रियं - शरीर की शोभा को,

हर्तुं - अपहरण करने के लिए,

भेरीनिनादं इव - यह नगाडे की ध्वनि है (ऐसी शंका को पैदा करते जैसा)

तीव्रनादं - महती ध्वनि को,

बिभ्रति - वहन करते है। शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - हे शेषाद्रि के नाथ! भँवरे, अपने काले शरीर के सौन्दर्य से कुमुद पुष्पों के काले सौन्दर्य को जीतने के लिए किये यह नगाड़े की ध्वनि है क्या? ऐसी शंका को पैदा करते जैसा झंकार करते हैं। आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - पद्मेशमित्र - यह कमल पुष्प का विशेषण है। सूर्य का मित्र अथवा सूर्य को अपना मित्र किये, ये दो अर्थ निकलता है। दोनों का अभिप्राय यह है कि सूर्य से विकसित। यह भोर होने का सूचक है। शतपत्रं= सौ पत्रों (पंखुडियों) वाला एक प्रकार का कमल पुष्प। सहस्र पत्र वाला भी कमल पुष्प है। भँवरों के जो स्वाभाविक झंकार है, यूद्ध में किये जाने वाले नगाड़े के ध्वनि के रूप में उत्प्रेक्षित है। भँवरे अपने सौन्दर्य रूप अपनी सेना से कुवलय पुष्पों के उनके सौन्दर्य रूप सेना को अपने झंकार रूप भेरीनाद से जीतता है। यह तात्पर्य है ॥१२॥

श्रीमन्नभीष्टवरदाखिललोकबन्धो

श्री श्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो।

श्री देवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते

श्रीवेंकटचलपते तव सुप्रभातम् ॥१३॥

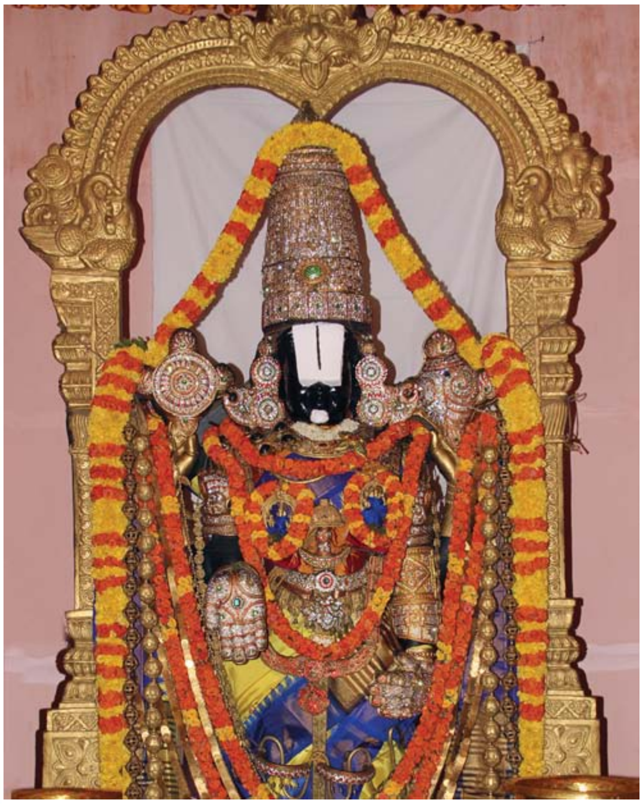

पदार्थ -

श्रीमन् - स्थिर सम्पद्वाले,

अभीष्टवरद - वाञ्छित वर को देने वाले,

अखिललोकबन्धो - समस्तजनों के सभी प्रकार के बन्धो,

श्री श्रीनिवास - सुन्दर हे श्रीनिवास,

जगत् एक - जगत् में समाधिक रहित (बेजोड़)

दया एक सिन्धो - करुणा के एक (मात्र) सिन्धो (समुद्र),

श्रीदेवता गृह भुजान्तर - श्रीदेवी (लक्ष्मी) रूप देवता के स्थान श्री वक्षः स्थल वाले,

दिव्यमूर्ते - सुन्दर (देह) शरीर वाले,

श्रीवेंकटाचलपते - श्रीवेंकटाद्रि के नाथ,

तव सुप्रभातम् - आपको यह सुप्रभात हो।

भावार्थ - श्रीमान होकर दया से भरे हमारी माता लक्ष्मीजी के विराजने का स्थान श्री वक्षःस्थल वाले दिव्य शरीर को हमें दिखाते, वांछित वर को देने वाले श्रीवेंकटाद्रि में वास करने वाले हे श्रीनिवास भगवन् आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - यहाँ 'श्री' शब्द 'नित्यविभूति' तथा 'लीलाविभूति' रूप सम्पदा को दिखाता है। यह 'अभीष्टवरद' होने का कारण है। श्रीमान होने पर ही याचक जिसकी याचना करते हैं, उसे दे सकते हैं। श्री वेंकटेशजी का शूभ नाम है 'श्रीनिवासः' लक्ष्मीजी का (विराजने) का स्थान यह अर्थ होता है। कैसा स्थान होता है जिसका विवरण करते है। "श्रीदेवतागृह भुजान्तर" यह शब्द लक्ष्मीजी को वक्षःस्थल में स्थान देकर तद्द्वारा उनका 'गृह' होते हैं। भगवान की स्वाभाविक दया वक्षःस्थल में रहने वाली भगवती लक्ष्मीजी से अभिवर्धित होकर उस भगवान की दया का समान रहित समुद्र जैसा हो जाते हैं भगवान-इस शब्द का सूचक शब्द है 'जगदेकदयैसिन्धो'। लक्ष्मीजी के संबंध से ही (शरीर में रहने से) भगवान दिव्यमूर्ति (वाला) होता है। भगवान के काला (श्याम) देह को (शरीर) लक्ष्मीजी के सोने के जैसे रंग वाले शरीर (के संबंध से) उज्वल दिखाता है (जैसे सोने में जटित हीरा-शोभा को बढाकर दिखाता है)। इसे 'परभागशोभा' कहते हैं।।१३।।

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाऽऽप्लवनिर्मलाङ्गाः

श्रेयोऽर्थिनो हरविरिञ्चिसनन्दनाद्याः।

द्वारे वसन्ति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः

श्रीवेंकटचलपते तव सुप्रभातम् ।।।१४।।

पदार्थ -

श्री स्वामि पुष्करिणिका

आप्लव निर्मलाङ्गाः - श्री स्वामि पुष्करिणी में स्नान करने से निर्मल देह वाले,

श्रेयः अर्थिनः - (आप से एक) श्रेय की (प्राप्त करने के लिए) इच्छा करने वाले,

हर, विरिञ्चि, सनन्दन आद्याः - शिव, ब्रह्मा, सनन्दन आदि,

द्वारे - आपके मंदिर के द्वार पर,

वर वेत्र हत उत्तमाङ्गाः - (द्वारपालको के) श्रेष्ठ बेंत से प्रहार किये सिर वाले होकर

(ताडित होकर) वसन्ति रहते हैं।

श्री वेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - हे वेंकटाद्रि के स्वामी, ब्रह्मा, शिव आदि देवता, सनन्दन आदि योगि श्री स्वामि पुष्करिणी (कोनेरी) में स्नान कर शुद्ध होकर आपके द्वारपालकों के बेंत के प्रहार को भी वाञ्छा (चाव) से स्वीकार कर हटे बिना द्वार को ही अपना वास स्थान मानकर वास करते हैं। उनको, दर्शन करने के लिए, आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - श्री स्वामि की पुष्करिणी, श्री स्वामिनी रूप पुष्करिणी यह दो व्युत्पत्ति इस 'श्रीस्वामिपुष्करिणिका' शब्द को है। स्वामी श्रीनिवास भगवान (श्रीनिवास स्वामी) जिस में अवभृत स्नान करते हैं, वह पुष्करिणी अथवा पुष्करिणियों में श्रेष्ठ पुष्करिणी ऐसा दोनों अर्थ पुराणों में कहे गये हैं।

वामन पुराण के ३२ वें अध्याय में शंखज से जो कहते हैं कि उस दिव्याद्रि में बड़े व पापों को दूर कर पुण्यों को प्रदान करनेवाले, गंगा आदि सकल तीर्थों के समान, शुद्ध तीर्थ (जल) वाली 'स्वामिपुष्करिणी' नाम से तीनों लोकों में प्रसिद्ध एक पुष्करिणी है, उस में स्नान कर लोग पापों से मुक्त होते हैं। इस वचन से इस पुष्करिणी के पावनत्व को जान सकते हैं।

पूर्व से ही श्रेष्ठ रहे शिव व ब्रह्मा और भी श्रेष्ठत्व को प्राप्त करना यह ही है कि वह श्रेष्ठत्व शाश्वत रहना। सनन्दन आदि सदा ब्रह्मा का ध्यान करने वाले हैं। वह (ध्यान) बीच में विच्छिन्न न हो यही प्रार्थना करने आये हैं।

''युगकोटिसहस्राणि विष्णुमाराध्य पद्मभू:। पुन स्त्रैलोक्यधातृत्वं प्राप्तवानिति शुश्रुम'' (ब्रह्मा, सहस्रों कोटियुग (कालसे) विष्णु की आराधना कर तीनों लोकों की सृष्टि करने के अधिकार को प्राप्त किये हैं, ऐसा सुनते हैं।) यह महाभारत का श्लोक स्मरण करने योग्य है।

वरवेत्रहतोत्तमाङ्गा: इसका भी अर्थ होगा कि श्रीपराशर भट्टारक के श्रीरङ्गराजस्तव के पूर्व भाग के ५८ वें श्लोक ''वेत्रवरं व्रजामि'' के अनुसार गर्भगृह (निज मंदिर) के द्वार के सामने आड़ा लगाये बेंत (छडी) में ठक्कर लगाये सिरवाले। बेंत से ठक्कर लगाने से उनके सिर 'उत्तमाङ्ग' इस सार्थक नाम को प्राप्त किये हैं ।।१४।।

क्रमश:

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(१८वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी का गोविन्दाचार्यजी को श्रीवैष्णव बनाना

यतिपुंगव श्रीरामानुजाचार्यजी द्वारा लिखे गये गोविन्दचार्यजी के कल्याणाथ पत्र को लेकर जो श्री वैष्णव श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी के यहाँ गये थे उन्होंने उनकी सेवा में उपस्थित होकर साष्टांग प्रणिपात किया। उन्हें आया देखकर श्रीरामानुजाचार्य ने पूछा कि - ''क्या गोविन्द सन्मार्ग में प्रवृत्त हो गया है? गोविन्द से एवं श्रीशैलपूर्णाचार्यजी से कैसे मुलाकात हुई?'' इत्यादि। श्रीरामानुजाचार्यजी की वाणी सुन करके वे श्रीवैष्णव बोले श्रीमन्! आपका पत्र लेकर हम आप लोग उसके चौथे दिन श्रीशैलपूर्ण स्वामी की सेवा में उपस्थित हुए। उसे देखकर प्रसन्न श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी बोले कि - ''मेरा भगिना गोविन्द दुर्जन यादवप्रकाश की दुरसंगति से एवं भगवान् विष्णु की त्रिभुवन विमोहिनी माया से मोहित होकर शिव सेवा में दत्तचित्त हो गया है। अरे! शास्त्रज्ञ ब्राह्मण भी माया मोहित होकर शिव इत्यादि देवताओं के कर्ता भगवान् नारायण को नहीं जान पाते है। जब श्रीरामानुजाचार्य भी गोविन्द का उद्धार चाहते हैं तो सबसे पहले हम लोगों को यही काम करना चाहिए।'' यह कहकर श्रीशैलपूर्णाचार्यजी ने हम शिष्यों को लेकर वेंकटाचल से कालहस्तिपुर के लिए प्रयाण किया। लोगों से यह जानकर कि गोविन्द इस तडाग में जल भरने के लिए प्रतिदिन आता है, श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी शिकार फँसाने वाले शिकारी की भाँती उसी जलाशय के किनारे श्री वैष्णव ग्रन्थों का उपदेश करते हुए ठहर गये। इसके बाद फिर शिव-भक्ति परायण गोविन्द उस तड़ाग से रुद्रभिषेकार्थं भक्ति भरे भावों से जल लेने आये। द्राविणी भाषा की रुद्रभक्ति परक गाथाओं का पाठ करते हुए गोविन्द ने मौन होकर एक बार हम लोगों को देखा फिर चलने के लिए उद्यत हो गया। उसे जाते हुए देखकर यतिश्रेष्ठ श्रीशैलपूर्णचार्य स्वामीजी बोले - ''अमलतास के फूल से सुशोभित सिर वाले शंकर की परिश्रमपूर्वक सेवा करने से आपको किस फल की प्राप्ति हुई?'' इसे सुनकर एक बार गोविन्द श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी को मौन दृष्टियों से देखकर चले गये। उसकी इन चेष्टाओं को देखकर

श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी हम लोगों के साथ वेंकटाचल चले आये।

इसके बाद कुछ दिन बीत जाने पर श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी गोविन्दाचार्य के हित की कामना से हम लोगों के साथ कालहस्तिपुर पधारकर पहिले की ही तरह उस जलाशय के तट में एक वट वृक्ष के नीचे उसकी प्रतीक्षा करने लगे। कुछ देर के बाद उन्होंने पंचाक्षर मन्त्र का जप करते हुए भस्म धूलि धूसरित शरीर, सम्पूर्ण संसार को शिवमय देखने वाले वाणासुर प्रभृति शिव भक्तों से भी बढकर, रुद्राक्ष की माला पहने हुए घड़ा लेकर जल लेने आते हुए गोविन्द को देखा। फिर उन्होंने यतिश्रेष्ठ श्रीयामुनाचार्य रचित आलवन्दार स्तोत्र के -

स्वाभाविकानवधिकातिशयेशितृत्वं,

नारायण त्वयि न मृष्यति वैदिक कः।

ब्रह्मा शिवः शतमखः परमस्वरडित्येतेऽपि

यस्य महिमार्णवविप्रुषस्ते।।

श्लोक को एक कागज पर लिखकर उसके मार्ग में डाल दिया। गोविन्द ने उसे उठाकर पढ़ा और चिन्तन करता हुआ घड़ा भरकर शिवालय को चला गया और वहाँ उसने शिवालय को धोया पोंछा। किन्तु व्याध द्वारा क्रौंच दम्पति में से नर क्रौंच का वध देखकर शोक संविग्न मानस वाल्मीकि के मन में श्लोक रुप में उत्पन्न शोक की भाँति उसके मन में उस श्लोक के विषय में जानने की इच्छा उत्पन्न हो गयी। वह पास फिर आकर बोला- ''वैष्णववर्य! आपकी यह अर्थ

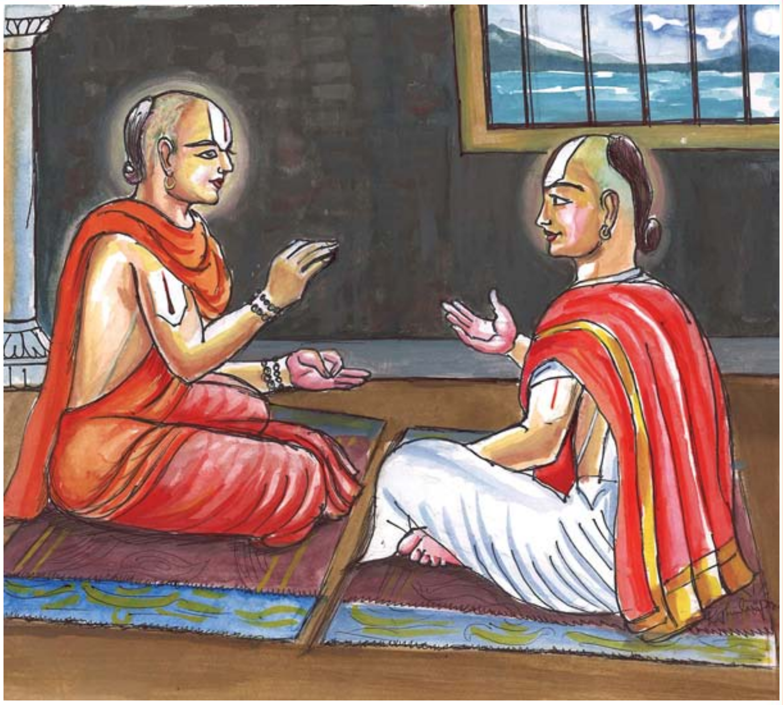

सम्पत्ति गिर गयी है, इसे आप संभाल लें।'' इस पर श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी बोले- ''हम लोगों की अर्थ सम्पदा नहीं गिरती, गिरी होगी किसी दूसरे की।'' इसे सुनकर गोविन्द बोले कि - ''आप अपनी चातुर्य भरी बातों को छोड़ दें और मेरी बातों को सुनें। अनेक मार्गों के होते हुए भी श्रीवैष्णव केवल इसी मत का ही अनुसरण क्यों करते है?'' उत्तर में श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी बोले- ''उज्ञीवन का यह मार्ग सबसे सुगम है।'' पुनः प्रश्न करते हुए गोविन्द बोले- ''क्या आप लोग यहाँ अपने बन्धुओं को पहुँचाने आये हैं?''

उत्तर में श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी बोले- ''हम लोग यहाँ गाय खरीदने आये हैं।'' गोविन्द ने फिर प्रश्न किया- ''क्या गोभक्त गोरज से पवित्र नहीं होते?'' श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी उत्तर में बोले- ''उचित स्थान पर पड़ी हुई गोधूलि अवश्य ही पवित्र कर देती है।'' मार्ग पर प्रश्न उठाते हुए गोविन्द ने पूछा- ''मार्ग चाहे टेढ़ा हो या सीधा, दोनों में कोई अन्तर तो होता है नहीं।'' इसका उत्तर देते हुए श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी बोले कि- ''ऋजु और वक्र दोनों के अलग-अलग होने से उन में ऋजुता और वक्रता ही अन्तर है।'' इस पर गोविन्द बोले कि- ''आपका उत्तर तो मौन कराने वाला है।'' श्रीशैलपूर्ण स्वामीजी ने गोविन्द को उत्तर दिया कि- ''अच्छे वाक्यों

का स्वाभाव ही यह होता है।'' गोविन्द बोले- ''सद्वाक्यों के विचार में कौन-कौनसी बातें देखी जाती हैं।'' उत्तर में श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी जी बोले कि- ''इसका विचार परतत्व निर्णय में किया गया है। यतिशेखर श्रीशैलपूर्ण स्वामी के युक्तियुक्त वचनों को सुनकर गोविन्द शिवालय में लौट गये। किन्तु श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी को यह विश्वास हो गया कि गोविन्द कल्याणमय श्रीवैष्णव मार्ग पर आ जायेगा। अतः वे उस दिन हम लोगों को लेकर वेंकटाचल लौट आये।

उन श्रीवैष्णवों के वचनों को सुनकर दाशरथी तथा कूरनाथ नामक अपने सच्छिष्यों को देखते हुए श्रीरामानुजाचार्यजी बोले - ''आप लोगों ने श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामीजी की युक्तियों के विषय में सुन लिया। गोविन्द श्रीयामुनाचार्य की सूक्ति से अवश्य प्रभावित हुए हैं। श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी का गाय खरीदने का बहाना जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए ही था। सकल कल्याण गुणगणाकर अखिलहेयप्रत्यनीक नारायण ही जगत्कर्त्ता है। ''सदेव सोम्यदमग्रासीदेकमेवा द्वितीयम्'' अर्थात् सृष्टि के पूर्वकाल में नारायण ही सूक्ष्म चिदचिद्विशिष्ट कारण रुप में विद्यमान थे।'' ''सत्यं ज्ञाननन्तं ब्रह्म'' ''ब्रह्मसत्यमय, ज्ञानमय एवं अनन्त है।'' ''तदैक्षत् एकोऽहं बहुस्याम'' पर ब्रह्म परमात्मा ने संकल्प किया कि लीलार्थ मैं समष्टि सृष्टि से व्यष्टि सृष्टि में उत्पन्न होऊँ। इन श्रुतिवाक्यों से परब्रह्म परमात्मा नारायण ही बतलाये जाते हैं। इन परब्रह्म परमात्मा के विषय में श्रुति स्मृति इतिहास पुराण के द्वारा जाना जाता है। सभी धर्म वेद से उपवृहित हैं। जीव दो तरह के होते हैं-

२. क्षर-(बद्ध संसारी) एवं २ अक्षर- (शेष, गरुड़, विष्वक्सेन) आदि जीवों की महत्ता इसलिए है कि वह कर्मांग ब्रह्मज्ञान प्राप्त करता है - ''अविद्यया मृत्युं तीर्त्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।'' अर्थात् कर्म के अनुष्ठानशील पुरुष प्राचीन कर्मों को पार करके ब्रह्म ज्ञान द्वारा अमृतत्व की प्राप्ति कर लेते हैं। ऐसे पुरुष वैष्णव सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए ऊर्ध्वपुण्ड्रादि धारण करके उपासनामय कर्म करते है। उस भगवत्प्राप्ति का स्वरूप कठोपनिषद् में एक रूपक द्वारा बतलाया गया है कि - ''सतत् सावधान मुमुक्षु रूपी शिकारी ओंकार रूपी धनुष्ञ पर आत्मा रूपी बाण को चढ़कर अमृत्व प्राप्ति रुपी लक्ष्य का बेधन करे।''

यतिवर श्रीशैलपूर्णाचार्य स्वामी की प्रामणिक युक्तियों से प्रभावित गोविन्द कुछ उत्तर नहीं दे सका। उसके बाद यतिश्रेष्ठ श्रीरामानुजाचार्यजी स्वामी बोले कि आगे क्या हुआ उसे आप लोग मुझे बतलायें। भगवन्! आपके संयोग से जड़ जंगम सभी प्रभावित होते हैं और त्रिपाद विभूति को प्राप्त करते है। तो फिर गोविन्द को क्या कहना है। उनकी शरणागति सम्बन्धी आख्यान को हम कहते हैं।''

।।श्रीप्रपन्नामृत का १८वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

१०४

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि आगे अब मैं सिर्फ शरणागति योग के प्रसंग का ही भली भाँति विवेचन करूँगा। शरणागति का स्वरूप क्या है, इस के अधिकारी कौन हैं। शरणागति का बाधक क्या है, शरणागत अधिकारी को किस तरह से समय बिताना चाहिए। श्री सीतारामजी के शरणागतों को क्या छोड़ना चाहिए, क्या ग्रहण करना चाहिए अब इन्हीं विषयों का अच्छी तरह से निर्णय करूँगा। आप लोग ध्यान देकर इस प्रसंग को श्रवण करिए। बहुतों का ऐसा कहना है कि ब्राह्मणों का ही मोक्ष होता है दूसरे का नहीं। बहुत लोग ऐसा भी कहते हैं कि सन्यासियों का ही मोक्ष होता है गृहस्थों का नहीं। कितने ऐसा कहते हैं कि जो घर द्वार छोड़ के जंगल में चले जाते हैं उन्हीं की मुक्ति होति है औरो की नहीं। किसी-किसी का यह भी कहना है कि जो बहुत संयम नियम का पालन करने हैं उन्हीं को निर्वाण पद मिलता है। बहुतों का कहना है कि जो माया को त्याग देते हैं, प्रपञ्च से फरक हो जाते हैं उन्ही को मोक्ष मिलता है। बहुत ऐसा भी बोलते हैं कि पुरुष ही मोक्ष के अधिकारी हैं स्त्रियाँ नहीं। किसी किसी के द्वारा ऐसा सुनने में आता है कि विद्वानों का मोक्ष होता है औरों का नहीं। इस प्रकार मुक्ति के सम्बन्ध में अनेक मत भेद सुनने में आते हैं परन्तु सब शास्त्रों का तथा उपनिषदों का सार भूत जो श्री गीताजी हैं उस में खुद अपने श्री मुख से साक्षात् श्री भगवान त्रिलोकीनाथ आज्ञा कर रहे हैं कि ब्राह्मण हो या क्षत्रिय, वैश्य हो या शूद्र, स्त्री हो या पुरुष, नपुंसक हो या पञ्चम, बालक हो या तरुण या वृद्ध, ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ, वानप्रश्थ हो या सन्यासी, पण्डित हो या मूर्ख श्री भगवान के श्री चरणों के शरण हो जाय वही इस जन्म के अन्त में अवश्य संसार बन्धन से छूटकर असीम सुख का स्थल जो परमपद हैं वहाँ चला जाता है। मनुष्यों के लिए तो कहना ही क्या है पशु पक्षी भी यदि श्री हरि के शरण में जाँय तो उनका भी फिर संसार समुद्र में पतन नहीं होगा। श्री भगवान की शरणागति करने का सबका एक रुप से अधिकार है। क्यों कि परमात्मा सब का निरुपाधिक पिता है। उनका नाम ‘‘निखिल जन्तु जात शरणय’’ है। इसका भाव यह हुआ कि चाहे कोई जीव क्यों न हो जो उनके शरण में आता है उसको किसी प्रकार का अधिकार भेद न विचारते हुए अति प्रेम से गद्गद् हृदय से स्वीकार करते हैं। श्री गीता शास्त्र का तो जोर देकर कहना है कि हर एक के लिए दुरत्यया माया से पार होने के लिए श्री भगवान की शरणागति ही सरल से सरल उपाय है। सारा ब्रह्माण्ड का दृश्य माया से ही रचा हुआ है। ब्रह्मा से लेकर चींटी पर्यन्त सब माया के अन्तर्गत हैं। जब तक प्रकृति से पार विराजने वाली श्री बिरजा नदी के जल का संस्पर्श नहीं होता है तब तक चेतन मात्र माया के ही अन्तर्गत हैं। यह माया परमात्मा की एक विचित्र शक्ति हैं। इसके रुप में हर एक को मोह लेने की प्रबल शक्ति है। कोई वर्ण हो, कोई आश्रम हो, जंगल में रहता हो या घर में शरीरधारी मात्र इस के चक्र में पड़े हैं। माया से रची हुई पृथ्वी के आधार से ही तो सब रहते हैं। माया के रचे हुए पदार्थों को ही तो खाकर जीते हैं। माया के रचे हुए शरीर में ही सब निवास करते हैं। गृह, मठ, घट, कमण्डल, अन्न, फल, पय, शाक सब माया कृत पदार्थ हैं। कोई गृहासक्त है कोई मठासक्त है, कोई पुत्र प्रेम में मग्न है, कोई शिष्यों पर

ही न्योछावर है। सारांश कहने का यह है कि हर एक जीव किसी न किसी प्रकार के बन्धन से जकड़ कर बँधे हैं। बिरजा स्नान के पहिले जो कोई कहे कि मैं माया से छूटा हुआ हूँ या मैं माया मोह से परे हूँ, उसको यही कहना चाहिए कि उस में बिल्कुल समझ नहीं है। जब कि बड़ों का बचन है कि : -

''गो गोचर जँह लगि मन जाई। सो सब माया जानहु भाई।'

तो बिरजा स्नान के पहले इस ब्रह्माण्ड में रहता हुआ माया के प्रपञ्च से छूटा हुआ किस तरह से माना जा सकता है। मृग चर्म माया कृत है, कम्बल माया कृत हैं, शाक, फल माया कृत है इस लिए किसी न किसी प्रकार सब माया के चक्र में है।

ऐसे और भी अनेक वचन महापुरुषों के हैं जैसे : -

''शिव बिरञ्चि कहँ मोहई को है बपुरा आन''

याने बड़े बड़े देव जो शिव ब्रह्मादिक हैं उन्हें भी यह मोह लेती है तो प्राकृत जीवों की कथा ही क्या है। ब्रह्मा शंकरादिक भी इस माया से थर थर काँपते हैं फिर और की बात ही क्या है।

''शिव बिरञ्चि जेहि देखि डराहीं। अपर जीव केहि लेखे माहीं''।

इस चौपाई का भाव वही है जो पहले कह चुके हैं। बहुत से ऐसे लोग है कि देखने में मालुम पड़ते हैं कि इन में माया का लेश मात्र भी नहीं हैं। परन्तु बड़ों का यह कहना है कि उन में भी ''तिल तैलवत, दारुत्रह्विवत'' याने तिल में तेल के समान, लकड़ियों में अग्नि के समान सूक्ष्म वासना रुप से बैठी ही हुई है। चाहे कुछ देर के लिए कुछ नहीं करती हो परन्तु जब चाहे तब उपद्रव मचा सकती है। भगवान के नित्य पार्षद, भगवान के साथ भगवान की सेवा निमित्त अवतार लेकर आते हैं उन में भी संसार में आने के नाते सूक्ष्म रूप से प्रविष्ट हो जाती है।

आदि् शेष भगवान के अवतार श्री बलराम जी श्री कृष्ण परमात्मा के प्रति मणि के लिए शंका कर बैठे और भगवान श्रीमुख से ''न प्रत्येतिममाग्रजः'' कह कर इस बात को स्पष्ट किये। इसी को सुक्ष्म रूप से इस विभूति में भगवत्पार्षदों में भी माया का निवास कहते हैं। यह कथा इस प्रकार है कि जब सत्राजित ने भगवान श्री कृष्णजी के ऊपर मणि चोरी का कंलक लगाया तो भगवान उस की खोज में लगे। पीछे पता चला कि शतधन्वा अक्रूरजी को मणि दे दिया और अक्रूरजी लेकर कहीं भाग गये बात भी सत्य ही थी। फिर भगवान अक्रूरजी को दूत द्वारा बुलवाये। पूछने पर अक्रूरजी बतलाये कि मणि हमारे ही पास है। फिर भगवान अक्रूरजी से बोले एकबार सब के सामने मणि को बता दीजिए। बाद चाहे जहाँ रखिए। कारण कि भैया बलरामजी की हमारे ऊपर शंका हो गई है कि श्रीकृष्णजी ही मणि रख लिये हैं और हमसे बताते नहीं। अतः आप जब मणि सब के सामने दिखा दीजिएगा तो शंका मिट जायेगी। उसी वक्त का भगवान का श्री मुख वचन है कि '' न प्रत्येतिममाग्रजः'' भगवान का वचन सुनकर अक्रूरजी ने वैसा ही किया। बाद श्री भगवान के ऊपर से बलरामजी की शंका मिट गई।

इस प्रकार इस ब्रह्माण्ड में माया का साम्राज्य है। दण्डकारण्य की यात्रा में माया की सूक्ष्म बासना ने श्री लक्ष्मणजी के द्वारा श्री जानकी तथा श्री रघुनाथजी का कुछ देर के लिये अपमान करवाया था। यह कथा पद्मपुराण के उत्तर खण्ड में है तथा बड़ों की गोष्ठी में प्रसिद्ध भी है। अतः इस माया का कठिन कर्त्तव्य कहने में नहीं आता है। वेद तथा पुराणों में इस से छूटने के लिये बहुत से उपाय बताये गये हैं, परन्तु जितना इस से छूटने का विचार करते हैं उतना ही ज्यादा उलझन में डाल देती है। जैसे बड़ों का वचन हैं कि : -

''श्रुति पुराण बहु युक्ति बताई। छुटै न अधिक अधिक अरुक्ताई।''

इसका भाव ऊपर कह चुके हैं। इस प्रकार माया जीवों को अपने चक्रव्यूह में फँसा रखी हैं। कहने वाले बहुत कहते हैं। सुनने वाले बहुत सुनते हैं। समक्ताने वाले बहुत समक्ताते हैं।

क्रमशः

(गतांक से)

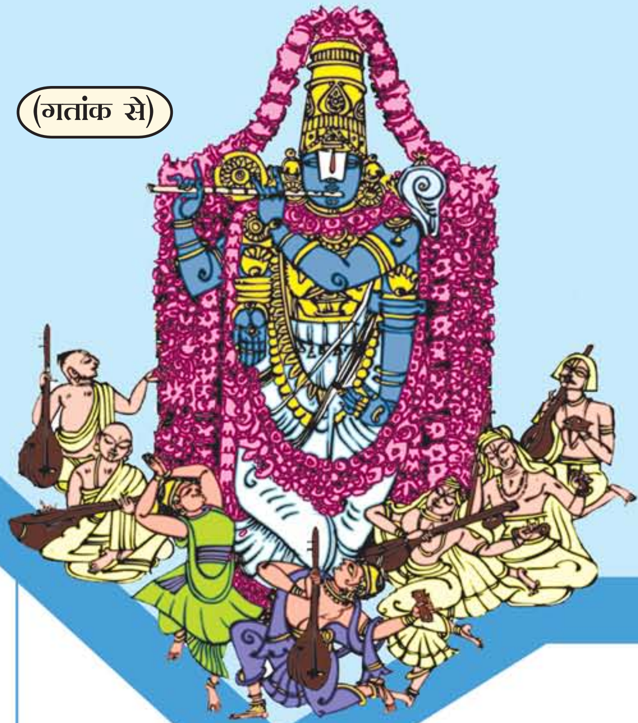

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ एम आर राजेश्वरी
मोबाइल - ९४९०९२४६७८

(मंगलांग महनीय गुणार्णव, गंगोदित पाद।
मन्मथुजनक, अहिराजशय्या हे श्रीरंग विठल, श्रीहरि, रक्षमाम्।।)

उपर्युक्त पंक्तियों में, संगीत के द्वारा श्रीहरि की लीलाओं को विशेषणात्मक शब्दों से प्रस्तुत करके, उन्हें याद कराया गया है।

श्रीपादराज जी की अन्य गीत- 'भूषणके भूषण, इदु भूषण। शेषगिरिवास श्रीवेंकटेश सुप्रसिद्ध है। इस में 'भूषण' शद्ब सौंदर्य को सूचित करता है। कहा जाता है कि श्रीवेंकटेश्वर स्वामी का इस सप्ताचल पर वास करना ही भूषण है श्री वादिराजा जी ने इस विषय का प्रस्तुतीकरण, भावगर्भित शब्दों में इस प्रकार कहा-

''दृष्ट्वा दिशिदिशि स्वीयान् दययापाल यन्निव।
वर्तते विश्वश्चक्षुर्वेंकटे वेंकटेश्वरः।''

(श्रीवेंकटेश्वर स्वामी, विश्व चक्षु बनकर अपने सभी भक्तों पर कृपावृष्टि बरसाने के लिए ऊँचे पहाड पर विराजमान होकर खडे हैं।

श्रीपादराज जी की एक और गीत 'स्मरि सिदवरनु काय्या' प्रसिद्ध है। इसके तीन चरण श्रीनिवास के तल, तथा भक्तपराधीनता के भाव करते हैं।)

''स्मरिसिदवरनु काव्यनम्म सूर्यनिक प्रभाव।
सुरमुनिगल संजीव! मिरि! वेंकट एम्मनु पोरेन''

(स्मरण मात्र से रक्षा करने वाले वेंकटेश्वर स्वामी असंख्य सूर्य किरणोंकी तेज कांति की भांति प्रकाशमान रहता है। यह भगवान देवतागण, मुनिराण के लिए संजीविनी बूढी के समान हैं। श्रीलक्ष्मीसमेत रहकर सभी की रक्षा कर रहा है।)

वैकुंठदिंदलिबंदु। ई शेषचलदलिनंदु।
भकुतर पालिसे नेंदु। अभयकर सिंधु।।
भुकुति मुकुति ईव मत्कुल देवने
सकलर पालिप घनगुण पूर्णने।
विकसितनयन कमल कंजनाभने ।
प्रकटित शुभकीरुति इंदमेरवने।।

(वैकुंठ को त्यागकर, सीधे इस पहाड़ पर विराजित रहनेवाले हे वेंकटेश्वर स्वामी! भक्तों का उद्धार ही तुम्हारा लक्ष्य बना है (रक्षणार्थम रमाकांतः रमते प्राकृतोय था)। हे भगवान तुम अभय सिंधु हो, भुक्ति तथा

मुक्ति, नामक दो फलों के प्रदाता हो। तुम हमारे कुलदेवता हो। समस्त जन की रक्षा करनेवाले सधनगुण संपन्न पूर्णस्वरुपा हो। अपनी नाभि से प्रफुल्लित कमल का सृजन कर, कल्याणभूत शुभकीर्तिवान बनकर प्रकाशमान रहते हो।)

ज्ञानगलिगे गोचरने! अ! ज्ञानिगलिगगोचरने।

ध्यानिसरल्लि निल्लुवने बलु। दैन्यादिगलुद्दारने।

आनंदमयने अनतावतारबने! अनुदिन नेनेवर हृदय मंदिरने।

तनुविनक्लेष दरित संहरने! घनमणि भूषण श्रृगारने।।

(ज्ञानिनां ज्ञानसाधनम्', 'दैत्यानां मोहनार्थाय', 'सुराणां मुक्ति सिद्ध से' - इन पुराणोक्तियों के अनुसार- 'हे श्रीनिवास! तुम ज्ञानियों के लिए गोचर रहते हो (ज्ञानीमप्रियोतमः)

और अज्ञानियों के लिए अगोचर हो। 'ध्यानेनात्मनिपश्यंति'- ध्यानमग्न रहनेवालों के हृदय मंटप में प्रकाशमान रहते हो। दीन-दुःखियों के तुम उद्धारक हो। तुम आनंद के सघन मूर्ति हो, आद्यंतावतार स्वरूपा हो। तुम्हीं पर ध्यानस्थ रहने वालों के हृदय में नाम करके, उनके शारीरिक पाप व ताप को नष्ट करके (चिन्तामणि बनकर) प्रकाशमान मणि बनकर अलंकारो के रूप में भासित होनेवाले श्रृंगारपुरुष हो।

''जयतु दोषविनाश। जय। जयतु। महिमा विशेष।

जयतु लकुमि परितोष। जयतु श्रीवेंकटेश।

जय कमलज जनकने जयजगदीश।

जय गजवरद पालिस पुण्यनाम।

जयतु जनार्दन मोहन वेष जयरंग विठल करुणा विलास।।

(हे रंगविठल श्रीनिवास! तेरा जय हो। तुम दोषों को दूर करनेवाले दोष विनाशक हो। लक्ष्मी के वास के कारण सुअलंकृत रहनेवाले श्रृंगारमूर्ति हो। तुम कमलज (ब्रह्मा) के जनक हो, जगत्पाति हो, गजराज के रक्षक हो, पुण्यश्लोकी हो, जनार्दन हो, मोहनाकारी हो, करुणा के समुद्र हो। भक्तिरस से पुष्ट यह संकीर्तन 'मोहन राग' में प्रस्तुत करने पर

श्रोता को आनंदातिरेक तथा रसानु भूति पूर्ण अनुभूति मिलता है।)

श्रीपादराज जी ने श्रीहरि के मूलरूप तथा उसके अवतारी रुपों में अभेद स्थापितकर श्रीवेंकटेश्वर, नारसिंह, श्रीराम तथा श्रीकृष्ण को सुति की है यही तीनों रूप क्रमानुसार कृतयुग, त्रेता एवं द्वापर युग के अर्चावतारी रूप भी बने।

कृतेतु नारसिंहोभूत। त्रेतायां रधुनंदनः।
द्वापरे वासुदेवश्च। कलौ वेंकट नायकः।।

श्रीपादरायजी ने उपर्युक्त पुराणोकियों के अनुसार जटिल शब्दों तथा दीर्धरुपात्मक पदों के द्वारा श्रीनिवास के तीन रूपों की उपासना की है।

''सागि बारैय्य नीनु। बागिन मिसुवे। योगिगल रसने श्रीनिवास।

भागिनमिसुवे भागवतरु बन्दु जागु माडदे निन्ना बागिलोन निंति हरो।।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनका आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- ☒ अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- ☒ भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- ☒ दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- ☒ मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- ☒ तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- ☒ पानी और बिजली को वृथा न करें।
- ☒ अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- ☒ पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- ☒ चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- ☒ भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- ☒ फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- ☒ तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- ☒ सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- ☒ विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

तिरुमल में निषेधित कार्य

- ⃠ तिरुमल में धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि निषेधित हैं।
- ⃠ अन्य मतों का प्रचार न करें।
- ⃠ पशु, पक्षी का वध निषेधित है।
- ⃠ तिरुमल में जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।
- ⃠ भिखमंगों का प्रोत्साहन न करें।
- ⃠ तिरुमल में प्रईवेट व्यक्तियों द्वारा केशखंडन या कल्याणकट्टाओं (क्षुरकशाला) को चलाना निषेधित है।
- ⃠ आवास को अनधिकारिक तौर पर देना या लेना मना किया गया है।

कुमारधारा तीर्थ

- श्री सी सुधाकर रेड्डी
मोबाइल - ९८६६०६०२६९

कलियुग वैकुंठ तिरुमला के किसी भी हिस्सा महत्वपूर्ण है। मूल झर्रियों को मूल रुप से सालिग्राम कहा जाता था। सात पहाडियों में सात सालिग्राम है। किंवदतियों का कहना है कि ऋषि और संत इस क्षेत्र में रहते थे। इसीलिए तिरुमला गिरियों के किसी भी स्थान का अपना इतिहास है। जिस क्षेत्र में तिरुमला श्रीनिवास रहते है, वहाँ के तीर्थों का समान महत्व है। मंदिर के दाई ओर श्री वेंकटेश्वर पुष्करिणी में नौ तीर्थ है। विभिन्न स्थानों में कई तीर्थ हैं। इन में से कुमारतीर्थ मुख्य है। कुमारतीर्थ के बारे में मिथक कथाओं के रुप में बताए जाते हैं।

तिरुमल शेषाद्रि पहाड तीन करोड तीर्थों के लिए प्रसिद्ध है। धर्म प्रतिपदाएँ, ज्ञान प्रदाएँ, भक्ति वैराग्य प्रदाएँ एवं मुक्ति प्रदाएँ ऐसे चार प्रकारों में विभाजित किया गया। धर्मप्रति प्रदाएँ १००८ हैं। भक्तों का मानना है कि इस तीर्थ में स्नान करने से धर्म शक्ति आती है। ज्ञान प्रदाएँ १०८ हैं। भक्तों का विश्वास है कि इन में स्नान करने से ज्ञान मिलता है। भक्ति वैराग्य प्रदाएँ ६८ है। लोगों का विश्वास है कि इन में नहाने से परिवार के दुःख मिटकर भक्ति की ओर मन लग जाएगा। श्रीवेंकटाचल माहात्मयम् में मुक्ति प्रधान तीर्थ के रूप में कुमार धारा तीर्थ है। भक्तों का मानना यह है कि कई युगों से यह तीर्थ मुक्ति प्रदान दिला रहा है।

वराह, वामन, मार्कंडेय पुराणों में इस तीर्थ की प्रशस्ति की गई। हर साल फाल्गुण मास पब्बा नक्षत्र पूर्णिमा के दिन कुमारतीर्थ मुक्कोटि का आयोजन किया जाता है। भक्त इस पर्व के अवसर पर तीर्थ में नहाकर दान-धर्मों का निर्वहण करके कुमार स्वामी के दर्शन कर लेते है। तिरुमला मंदिर से लग-भग ७ किलोमीटर की दूरी पर घने जंगलों में ऊँचे पहाडों के बीच यह तीर्थ है। कुमारतीर्थ धारा फटे हुए दो पहाडियों के बीच से निकलती है। पहाड की गुफा में कुमार स्वामी की मूर्ति होती है।

वराह, वामन, मार्कंडेय पुराणों के अनुसार प्राचीन काल में एक बुजुर्ग ब्राह्मण ने अपने बेटे कौंडिन्य के साथ देश की यात्रा की और संबंधित दिव्य स्थानों का दौरा किया और अंत में वेंकटाचल क्षेत्र पहुँचे। उस पल बूढे ने अपने लापता बेटे की तलाश शुरु कर दी। उन्होंने रोते हुए कहा कि- ‘‘इस उम्र में बूढे को छोड़कर जाना कहाँ तक उचित है।’’ उस प्रांत में श्रीनिवास भगवान ने बूढे आदमी से मिले और कहा कि- ‘‘हे बुजुर्ग! आप अपनी आँखों से ठीक से नहीं देख सकते। कान श्रव्य नहीं है। आप किसकी तलाश कर रहे है।’’ तुरन्त बूढे आदमी ने बताया कि- ‘‘हे स्वामी! आप प्यार से पूछ-ताछ कर रहे हैं। मेरे बारे में उत्सुकता से पता कर रहे है। मेरा बेटा कौंडिन्य दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने आप से अपनी रक्षा करने की भीख माँगी।

‘‘प्रिय ब्राह्मण! आपका शरीर बुढापे के कारण उलझा हुआ है। भले ही सफेद पाली हो। आपकी

पलके और त्वचा झुलस रही है। इस स्थिति में भी बेटे पर प्यार की भावना समाप्त नहीं हुई है।'' श्रीनिवास भगवान ने सांत्वना दिलाते हुए कहा कि- ''पुत्र पर आकर्षण की भावना को छोड़कर शांत से रहे। आप जो बाते कर रहे हैं, उन्हीं बातों को सत्य की तरह मानकर तुम को मुक्ति प्रधान कर रहा हूँ।'' इससे बूढे व्यक्ति ने स्वामी से विनती की कि- ''मैं अब इस वृद्धावस्था में नहीं रह सकता। अब तक मैंने कोई दैनिक अनुष्ठान, ज्योतिषीय अनुष्ठान नहीं किया है। मैं पितृ सत्तात्मक संस्कार न करने की वजह से देवताओं एवं पिताओं का ऋणी हूँ।'' ऐसा बूढा कहने पर श्रीनिवास भगवान ने उनके दो हाथ पकड लिए और अपने बगल में रहे शुद्ध फव्वारे की ओर इशारा किया और उनसे कहा कि उस धारा में स्नान करे और आश्रम जाए।

८२ साल का बूढा नहाते समय १६ साल के किशोर में बदल गया। श्रीनिवास भगवान उस समय बूढे व्यक्ति को एक युवा व्यक्ति के रुप में, एक हजार आखों से, एक हजार सिरों से और लौकिक रुप में दिखाई दिए। इस के अलावा, छह मुखी कुमारस्वामी ने पहले देवताओं के सेनापति के रुप में देवताओं की प्रार्थना को स्वीकार किया था। इस बीच देवताओं और तारकासुर के बीच भयंकर युद्ध हुआ। देवसेनाधिपति कुमारस्वामी तारकासुर को इस संघर्ष में मारडाला। इसलिए ब्रह्महत्यादोष कुमारस्वामी का पीछा किया। इसे खोने के लिए कहाँ-कहाँ घूमा पता नहीं, अंत में कैलास पहुँचकर भगवान शिव के शरण में आते है।

कैलासनाथ ने कहा कि- ''तुम तुरन्त भूलोक में रहे वेंकटाचल जाओ। उधर एक तीर्थ रहेगा। उधर जाकर पुण्य स्नान करे।'' उस प्रकार कुमार स्वामी ने इस तीर्थ में स्नान किया, इसलिए इसका नाम कुमारतीर्थ पड़ा। किंवदंती है कि स्वयं देवी पार्वती ने भी इस तीर्थ में स्नान किया था। किंवदंती है कि माघ के महीने में माघ महीने के दौरान तारा माघ के साथ पूर्णिमा के दिन दोपहर में स्नान करना, बारह वर्षो तक गंगा में स्नान करने के बराबर है। इंद्रियों के संयम का पालन करते हुए प्रतिदिन तीन बार कुमारतीर्थधारा में स्नान करना चाहिए। इस प्रकार जो लोग तीन महीने तक नियमित रुप से इस तीर्थ में स्नान करते हैं तो उन्हें उम्र बढ़ने से छुटकारा मिलेगा। वैसा ही नहीं शरीर भी हीरे की तरह मजबूती के साथ आता है। सभी पाप दूर हो जाते हैं। सभी संपत्तियो के साथ कई सुख भी प्राप्त होते हैं। अंत में मोक्ष भी मिलता है। कुमारतीर्थधारा जैसे कई लोकप्रिय तीर्थ है। इसलिए जो भक्तगण तिरुमला आते हैं, पुण्य स्नानों का आचरण करके श्रीनिवास भगवान के दर्शन कर लेते हैं।

तिरुमालै आण्डान (मालाधर स्वामी)

- श्रीमती पूजा मधवदास. अर्गवाल
मोबाइल - ९४२५४०८९२१

तिरुनक्षत्रः कुम्भ मास, मघा नक्षत्र

अवतार स्थलः तिरुमालिरुन्चोलै

आचार्यः श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी

शिष्यः श्रीरामानुजाचार्य (ग्रन्थ कालक्षेप शिष्य)

श्रीमालाधर स्वामीजी श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी के मुख्य शिष्यों मे एक थे। वे मालाधर और श्रीज्ञानपूर्ण स्वामीजी के नाम से विख्यात थे।

श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी श्रीरामानुज स्वामीजी को हमारे सत्सम्प्रदाय के विभिन्न विषय तत्त्वों को पढाने के लिए अपने ५ प्रथम शिष्यों को निर्देश किये थे। उन में से तिरुमालै आन्डान को श्रीसहस्रगीति का अर्थशिक्षण की जिम्मेदारी दी थी - श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी के परमपद प्राप्ति और श्रीरामानुजाचार्य के श्रीरंगम प्रवास होने के बाद श्रीगोष्टीपूर्ण स्वामीजी ने श्रीरामानुजाचार्य को श्रीमालाधर स्वामीजी से सहस्रगीति का गुप्तअर्थ एवं विशेषणों को समझने के लिये भेजे। (श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी श्रीरामानुज स्वामीजी को पांच रहस्य सिखाने के लिए पांच आचार्यों को नियुक्त कर रहे हैं)

श्रीमालाधर स्वामीजी ने जैसे श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी से श्रीसहस्रगीति के अर्थों को सुने वैसे ही श्रीरामानुज स्वामीजी को व्याखयान करते रहे। लेकिन कई बार, श्रीरामानुज स्वामीजी ने कुछ श्लोकों (पाशुरों) का अपना दुष्टिकोण (श्रीमालाधर स्वामीजी द्वारा बताया अर्थो से अलग अर्थ) से प्रस्तुत किये। उसे सुनकर श्रीमालाधर स्वामीजी सोचते थे कि श्रीरामानुज स्वामीजी स्वविचार, जो आलवन्दार के व्याख्याननुरुप से भिन्न है, को प्रस्तुत कर रहे थे। क्यों कि उन्होंने ऐसा निर्वचन आलवन्दार से कभी नहीं सुना था।

इस तरह एक बार, श्रीमालाधर स्वामीजी ने श्रीसहस्रगीति ''२.३.३ अरिया कालत्तुल्ले'' पासुर की व्याख्या ऐसे किया - ''आळवार सन्ताप से कह रहे हैं कि भगवान् श्रीमन्नारायण उनको निष्कलंक ज्ञान देने के बाद भी उसे इस शरीर के साथ इसी संसार में रखा है''। लेकिन श्रीरामानुजाचार्य इसे दूसरे तरीके से (दूसरी पंक्ति पहले रखकर) देखे थे। उन्होंने कहा कि वास्तव में यह पासुर में आल्वार के हर्षोत्फुल एवं सुखमय भाव अभिप्रेत है अर्थात् आलवार बहुत खुशी में भगवान से कहते हैं कि ''अनाधिकाल से मैं इस संसार में पीडित था। आपने मुझे इस अनायात से बचाया। क्यों कि इस दशक में आलवार के पूर्ण आनंद का रहस्योद्घाटन करता है।'' यह सुनकर आण्डान बहुत परेशान हुए और बोले थे कि ऐसे अर्थ को आळवन्दार से कभी नहीं सुना। जैसे विश्वामित्र मुनि ने त्रिशंगु महाराज के लिए एक नया लोक का निर्माण स्वयं किये थे, वैसे श्रीरामानुजाचार्य नए अर्थों का सृजन कर रहे थे। ऐसे बोलकर उन्होंने अपना व्याख्यान भी बंद कर दिया। यह सुनकर तिरुक्कोष्टियूर नम्बी तुरंत तिरुक्कोष्टियूर से श्रीरंगम आये और आण्डान से इस घटना के बारे में पूछे। आण्डान बोले कि श्रीरामानुजाचार्य आळवन्दार से अनुसुना अर्थों को बताते हैं। जब आण्डान पूरी घटना बताये तब नम्बी कहे कि वे स्वयं आळवन्दार से इसी अर्थ

को सुना है और यह श्लोक (पासुर) का एक मान्य स्पष्टीकरण है। उन्होंने आगे कहा कि ''जैसे भगवान् श्रीमन्नारायण (श्री कृष्ण) ने सांदीपनी मुनि से सीखा था, वैसे रामानुजाचार्य आप से तिरुवाय्मोलि सीख रहे हैं। आळवन्दार के विचार से भिन्न श्रीरामानुजाचार्य कुछ नहीं बोलेंगे। यह मत समझना कि श्रीरामानुजाचार्य को जो भी आप सिखाते हैं वो उसे पहली बार सुन रहे हैं।'' फिर वे आण्डान और पेरियनम्बी को श्रीरामानुजाचार्य के मत में लाकर श्रीरामानुजाचार्य को आडान से श्रवण पुनर्प्रारंभ करने की आवेदन किया।

इसके बाद, श्रीरामानुजाचार्य अलग ढंग से एक और श्लोक का अर्थ बताये। आण्डान आश्चर्य से श्रीरामानुजाचार्य को पूछे कि बिना आळवन्दार से मिले आप ऐसे अर्थविशेषों को कैसे समझते हैं? श्रीरामानुजाचार्य बोले कि जैसे एकलव्य के द्रोणाचार्य थे वैसे मुझे आळवन्दार हैं। (एकलव्य सीधे द्रोणाचार्य से मिले बिना उन से सब कुछ सीखा था।) आण्डान श्रीरामानुजाचार्य की महानता को समझे और उनको अपना सम्मान पेश किया। उनको ये सोचके बहुत हर्ष हुआ कि जो भी अर्थविशेषणों को आळवन्दार से वो सुन नहीं पाये वो सब सुनने का एक और अवसर मिला।

ऐसे कई पासुर है जिनकी व्याख्या श्रवण में, आण्डान और श्री रामानुजाचार्य के विभिन्न दृश्यकोण (विचारों) को देख सकते हैं जो निम्नलिखित हैं :

तिरुवाइमोळि १.२. नमपिळ्ळै व्याख्यान वीडुमिन मुट्रवुम्''

परिचय अनुभाग - आळवन्दार से सुना आण्डान, श्री रामानुजाचार्य को इस दशक को प्रपत्ति योग का विवरण जैसे व्याख्यान किये। श्री रामानुजाचार्य भी आरम्ब में वही दृष्टिकोण का पालन किये। लेकिन श्री भाष्य पूरी करने के बाढ में उन्होंने इस दृष्टिकोण को बदलके इस दशक को भक्ति योग विवरण जैसे व्याख्यान करने लगे। श्री रामानुजाचार्य प्रपत्ति को ''साध्य भक्ति'' नाम से पृथक किये, क्यों कि प्रपत्ति योग सब से गोपनीय है और आसानी से गलत व्याख्यान किया जा सकता है (मैं हूँ भक्ति कर्ता और भोक्ता ''ऐसे अहंभाव के बिना सिर्फ श्रीमन्नारायण के आनंद के लिए जो भक्ति होता है वही साध्य भक्ति है) यह साध्य भक्ति उपाय/साधन भक्ति से अलग है (जो अक्सर भक्ति योग नाम से प्रख्यात है)। श्री गोविन्द पेरुमाळ भी श्री रामानुजाचार्य की ऐसे दृष्टिकोण का पालन किये।

तिरुवाइमोळि २,३,१ - नमपिळ्ळै व्याख्यानम् - तेनुम पालुम् अमुदुमोत्ते कलन्दोळिन्दोम्''

इस पासुर का व्याख्यान आण्डान ने ऐसे किया था - ''आळवार बोलते हैं कि जैसे शहद और शहद या दूध और दूध स्वाभाविक रुप से अपने आप में मिश्रण होता हैं वैसे ही श्रीमन्नारायण और मैं समेकित हो गये।'' लेकिन श्रीरामानुजाचार्य उसका व्याख्यान ऐसे किये - आळवार कहते हैं कि हम (मैं और श्रीमन्नारायण) इस प्रकार मिले जिस से मधु, दूध और चीनी आदि मीठे सामग्री के मिश्रण से प्राप्त अमृतमय भोग्यवस्तु का पूर्ण अनुभव किये।

नाचियार् तिरुमोळि ११.६ व्याख्यान में पेरियवाचान् पिळ्ळै ने आण्डान का आचार्य भक्ति को स्वयं दिखाते हैं - आण्डान कहा करते थे कि ''यद्यपि हमें इस शरीर और उससे संबंधित सारे बंधनों को छोड्ना चाहिए परन्तु मुझे इस शरीर की उपेक्षा करना अमान्य है, क्यों कि मुझे इस शरीर से ही आलवन्दार का संबंध प्राप्त हुआ।''

नायनार् आचान् पिळ्ळै ने अपने चरमोपाय निर्णय ग्रन्थ में प्रदर्शन किये कि एक बार तिरुमालै आण्डान ''पोलिग पोलिग'' श्लोक (पासुर) (तिरुवाइमोळि ५,२) का व्याख्यान करते समय तिरुक्कोश्टियूर नम्बि गोष्टि में प्रकट किये कि इस श्लोक में वर्णित श्रीरामानुजाचार्य ही है। इसे सुनकर आण्डान को परमानंद की प्राप्ति हुई और श्रीरामानुजाचार्य को तब से अपना आचार्य अलवन्दार मानकर यही घोषित किये।

आण्डान् का ध्यान श्लोक -

रामानुज मुनीन्द्राय द्रामिडी सम्हितार्थदम्।
मालाधर गुरुम् वन्दे वावधूकम् विपस्चितम्।।
माघे मघायां सम्भूतं द्राविडाम्नाय देशिकम।
तुरीयार्यम यतीन्द्रस्य मालाधार गुरं भजे।।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

नाट्टिय नीचच्चमयंगळ् माण्डन, नारणनै
क्काट्टिय वेदम् कळिप्पुत्तुदु, तेन्कुरुहै वळ्ळल्
वाट्टमिला वण्डमिळ् मरैवाळ्न्ददु मण्णुलहिल्
ईट्टिय शीलत्तु, इरामानुजन्त्त न्नियल्वु कण्डे ॥५४॥

भूलतेऽस्मिन् समेधमानसद्गुणगणस्य भगवतो रामानुजस्य स्वभावावलोकनमात्रत एवं क्षुद्र मतान्यनश्यन्; श्रीमन्नारायणपरश्रुतितति: प्रमुमुदे; कुरुकापुरीशशठजिन्मुनीन्द्रद्रमिडोपनिषच्च संजीवतिस्म॥

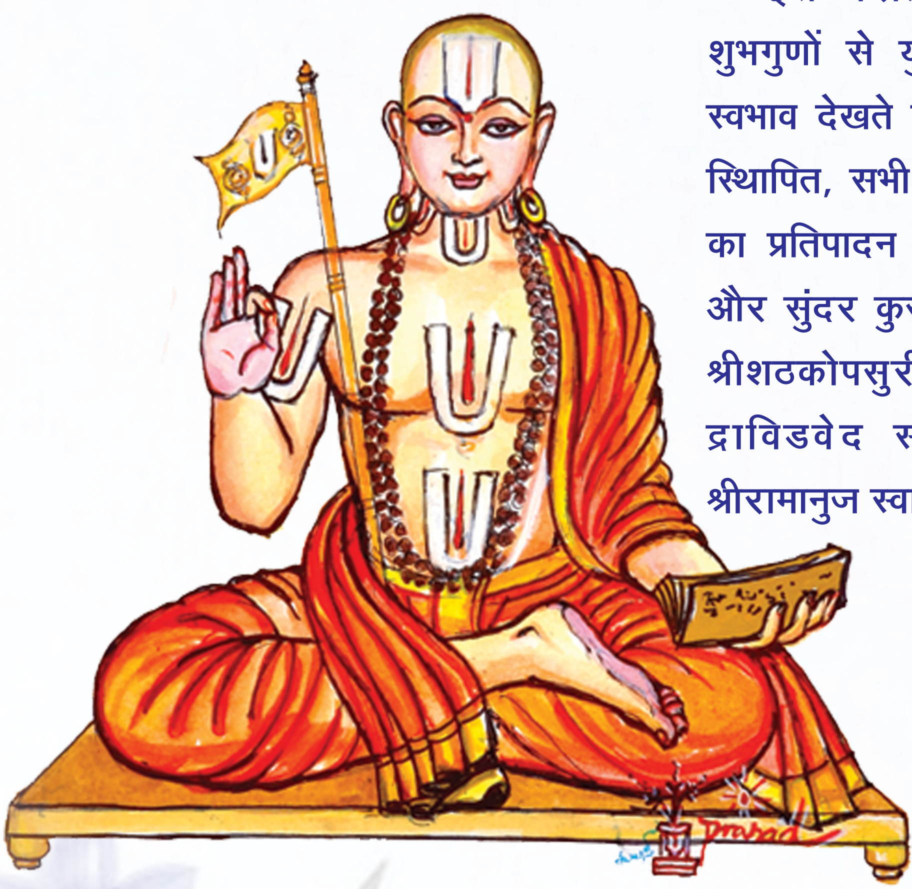

इस धरातल पर क्षणे-क्षणे बढनेवाले शुभगुणों से युक्त श्रीरामानुजस्वामीजी का स्वभाव देखते ही क्षुद्रयुक्तियों के आधार पर स्थिापित, सभी दुर्मत नष्ट हुए; श्रीमन्नारायण का प्रतिपादन करनेवाले वेद आनंदित हुए; और सुंदर कुरुकापुरी में अवतीर्ण परमोदर श्रीशठकोपसुरी से अनुगृहीत, दोषरहित, द्राविडवेद संजीवित हुआ। (विवरण- श्रीरामानुज स्वामीजी ने श्रेष्ठ प्रमाण व युक्तियों के आधार से संस्कृत व द्राविड वेदों के सदर्थों का वर्णन किया; इससे उन वेदों का दु:ख दूर हुआ और दुसरे कुमत नष्ट हो गये।)

क्रमश:

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या
मोबाइल - ९९४९८७२१४९

चतुर्थः पाठः = चौथा पाठ

एते = वे	अद्य = आज	आसन् = रहे थे
के = कौन	एकदा = एकबार	आस्त = रहे थे(दोनों)
र्वे = सब	सर्वदा = हमेशा	आस्म = हम सब रहे थे।

प्रश्न :

१. एते अद्य कुत्रासन्?
२. ते एकदा तत्रासन्।
३. यूयं सर्वदा अत्रास्त।
४. वयं कदा अत्रास्म?
५. तत्र के आसन्?
६. सर्वे तत्रासन्।
७. ते के?
८. वयं अद्य तत्र स्मः।
९. त्वम् अत्र नासीः।
१०. बत! अहम् अत्रासम्।

जवाब :

१. ये आज कहाँ हैं?
२. वे एकबार वहाँ थे।
३. आप यहाँ हमेशा रहते थे।
४. हम सब कब यहाँ रहते थे।
५. वहाँ कौन था?
६. सब लोग वहीं थे।
७. वे कौन हैं?
८. हम आज वहाँ हैं।
९. आप यहाँ नहीं हैं।
१०. हाय! मैं यहाँ रहा हूँ।

प्रश्न :

१. तुम कौन हो?
२. हम सब यहाँ रहते थे।
३. वह अब वहाँ हैं।
४. तुम वहाँ नहीं हो?
५. हम सब वही हैं।
६. क्या तुम सब वहाँ हो।
७. इस समय वहाँ कौन हैं?
८. वे, ये, हम वहाँ थे।
९. तुम वहाँ कब थे।
१०. हम सब इस समय वहाँ थे।

जवाब :

१. यूयं के?
२. वयं अत्र आस्म।
३. अद्य सः तत्रास्ति।
४. किं त्वं तत्र नासीः?
५. वयं सर्वे तत्र आस्म।
६. यूयं सर्वे किं तत्र आस्त?
७. के अद्य तत्र सन्ति?
८. ते, एते, वयं तत्र आस्म।
९. यूयं कदा तत्र आस्त?
१०. वयं अद्य तत्र आस्म।

रामकृपा! राजकृपा!

- श्री के.रामनाथन
मोबाइल - ९४४३३२२२०२

धर्मपुर के राजा रत्नसेन को इस बात पर बडा गर्व था कि मेरे बुद्धि बल के कारण ही प्रजा सुखी जीवन बिता रहे हैं। इस घमंड के कारण उसके मन से भगवान के प्रति भक्ति भावना हट गयी। एक दिन वह अपने रथ पर कहीं जा रहे थे। तब उन्होंने एक स्थान पर दो भिखारी को देखा। उनमें से एक तो माथे पर राम का तिलक लगाये रामकृपा! कहकर भीख माँग रहा था। दूसरा तो राजकृपा! राजकृपा! कहकर भीख माँग रहा था। इस पर राजा को बडा आश्चर्य हुआ। अगले

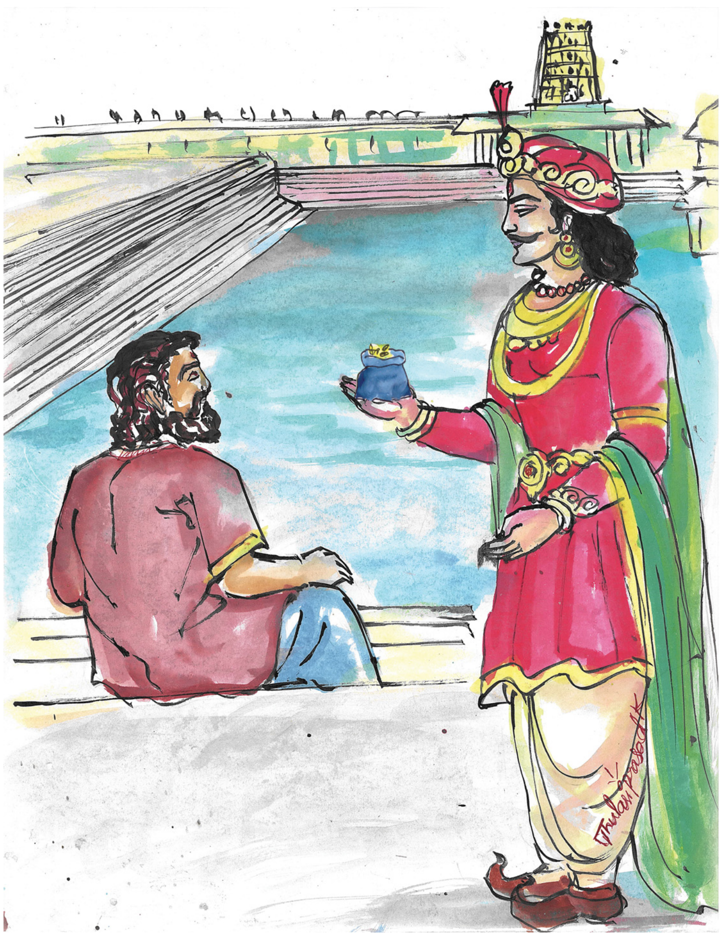

दिन राजा ने उन दोनों भिखारियों को अपने दरबार में बुलवाकर राम कृपा और राज कृपा कहकर भीख माँगने का कारण पूछा।

पहले भिखारी ने कहा, ''महाराज! सब लोगों का पेट पालने वाला ईश्वर राम ही है। इसलिए मैं ऐसा कहकर भीख माँगता हूँ।'' दूसरे ने कहा, ''महाराज! मैं समझता हूँ ईश्वर से बढकर हमारे समक्ष रहने वाले राजा तो श्रेष्ठ हैं। इसलिए तो मैं राजकृपा कहकर भीख माँगता हूँ।''

उन दोनों के चले जाने का बाद राजा ने प्रधानमंत्री से कहा, ''इन दोनों से दूसरा भिखारी बडा समझदार है। वह जीवन का सत्य जानता है।'' अब राजा के मन में यह देखने की इच्छा उठी कि उन दोनों भिखारियों में कौन बडा है?

अगले दिन राजा के जन्मदिन पर गरीबों को दान देने का निश्चय किया गया। उस दिन अनेक गरीब राजा से दान लेने लंबी कतार में खडे थे। राजा ने हर गरीब को एक धोती और एक बडा लौकी दे रहा था। उस कतार में वे दोनों भिखारी भी थे। जब भिखारी राजकृपा की बारी आयी तो राजा ने अन्दर से एक विशेष लौकी मंगाकर उसे दान में दिया। जब भिखारी रामकृपा की बारी आयी तो उसे अन्य लोगों की

तरह का दान दिया। कुछ दिन बाद राजा ने गली में देखा और चौंक उठा कि वह राजकृपा वाला भिखारी हमेशा की तरह भीख माँग रहा था। उन्होंने उसे पास बुलाकर पूछा, ''मैंने तो तुमको एक विशेष लौकी को दान में दिया था। उसे पाने के बाद भी तुम क्यों भीख माँगते फिरते हो।''

उसने कहा, ''महाराज! मैंने उसे दुकान में बेच दिया और मिले पैसों से दो दिन तक सुखी रहा। अब फिर भीख माँग रहा हूँ।'' उसका जवाब सुनकर मंत्री ने गुस्से में चिल्लाया, ''अरे मूर्ख!! उस विशेष लौकी में सोना, हीरा, जवाहरात, मोती आदि बहुमूल्य चीजो को रखकर राजा ने तुमको दान दिया था। जिनसे तुम अपने परिवार सहित सुखमय जीवन बिता सकते हो। लेकिन तुम ने अपनी मूर्खता के कारण सब कुछ बरबाद कर लिया है।'' फिर राजा ने रास्ते में देखा कि कोई एक धनवान बडे डाटबाट से पालकी पर जा रहा है। राजा ने उसे तुरंत पहचान लिया वह तो भिखारी रामकृपा है। राजा ने उसे पास बुलाकर पूछा कि वह कैसे बडा धनवान बना? उस ने जवाब दिया, ''महाराज! दस दिन पहले मैं भगवान की पूजा करने दुकान से एक लौकी खरीद लायी और उसे काटा तो अन्दर सोना, मोती, हीरा, जवाहरात आदि को पाया। मैंने समझ लिया कि वे सब ईश्वर की देन है। उन सब को बेचने से बडा धन मिला और मैं भी धनवान बन गाया।''

अब राजा समझ गया कि भगवान की कृपा मिलने पर ही कोई अपने जीवन में उन्नति पा सकता है।

'मानव सेवा ही... माधव सेवा'

आर्ष धर्म में बताया गया है।
सह प्राणियों को किसी भी तरह रक्षा की
जाय, तो अनंत पुण्यफल हमें और हमारे परिवार को
मिलेगा। कलियुग वैकुण्ठ के भगवान का
आवास स्थान तिरुमल में रक्तदान
करना परम पवित्र कार्य है।
आपके रक्त से अन्य व्यक्ति का प्राण बचता है।

तिरुमल में रक्तदान कीजिए।

तिरुमल अश्विनी अस्पताल में प्रतिदिन सुबह 8 बजे से
लेकर दोपहर 12 बजे के अंदर
कोई भी रक्तदान कर सकता है।

दूरभाष - 0877-2263601

आइये... रक्तदान कीजिए!
संकटग्रस्त व्यक्ति को सहायता कीजिए!!

उत्तम पुत्र

चित्रकथा

तेलुगु में - डॉ.के.रविचंद्रन
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री के.तुलसीप्रसाद

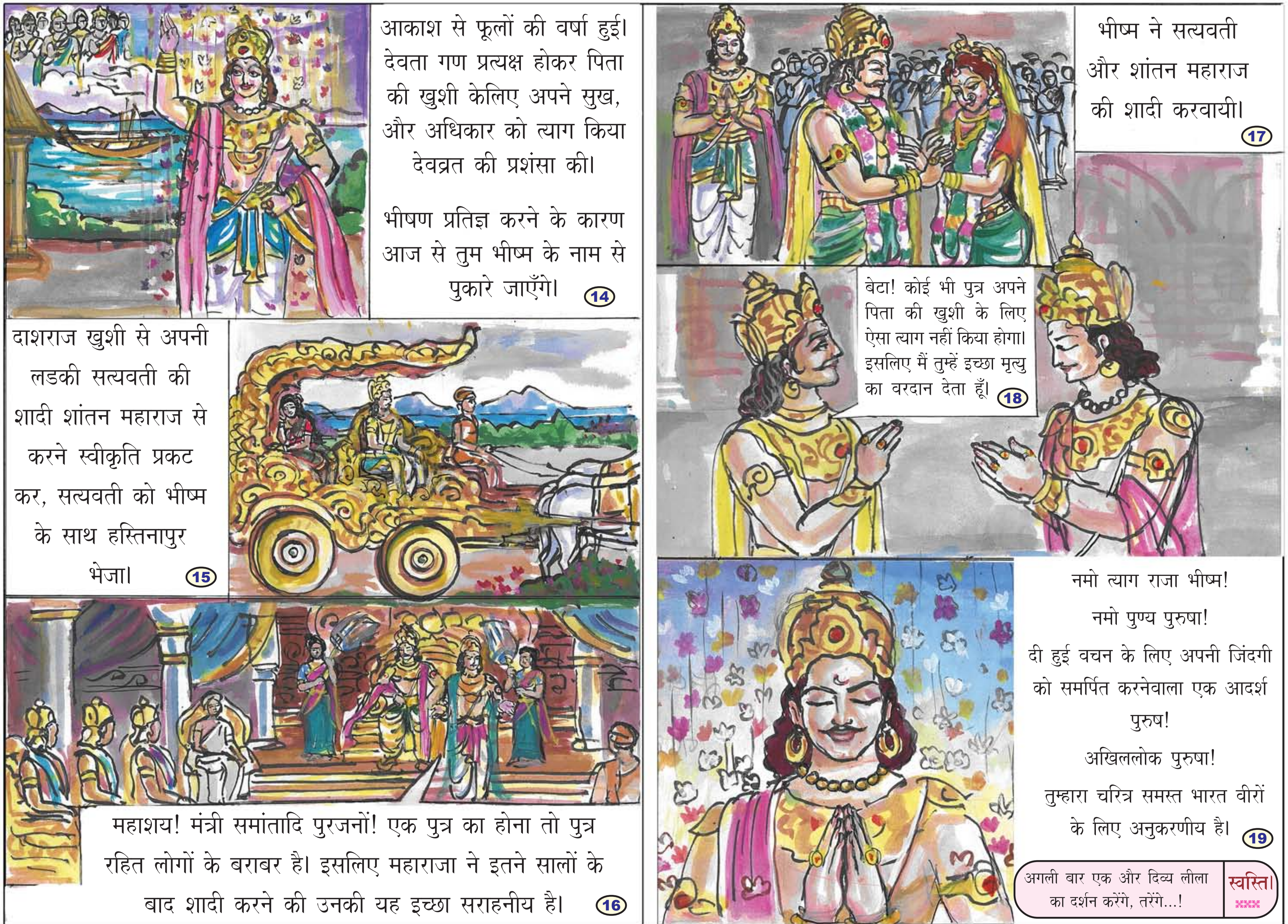
आकाश से फूलों की वर्षा हुई। देवता गण प्रत्यक्ष होकर पिता की खुशी केलिए अपने सुख, और अधिकार को त्याग किया देवव्रत की प्रशंसा की।
भीषण प्रतिज्ञ करने के कारण आज से तुम भीष्म के नाम से पुकारे जाएँगे। 14
दाशराज खुशी से अपनी लडकी सत्यवती की शादी शांतन महाराज से करने स्वीकृति प्रकट कर, सत्यवती को भीष्म के साथ हस्तिनापुर भेजा। 15
महाशय! मंत्री समांतादि पुरजनों! एक पुत्र का होना तो पुत्र रहित लोगों के बराबर है। इसलिए महाराजा ने इतने सालों के बाद शादी करने की उनकी यह इच्छा सराहनीय है। 16
भीष्म ने सत्यवती और शांतन महाराज की शादी करवायी। 17
बेटा! कोई भी पुत्र अपने पिता की खुशी के लिए ऐसा त्याग नहीं किया होगा। इसलिए मैं तुम्हें इच्छा मृत्यु का वरदान देता हूँ। 18
नमो त्याग राजा भीष्म!
नमो पुण्य पुरुषा!
दी हुई वचन के लिए अपनी जिंदगी को समर्पित करनेवाला एक आदर्श पुरुष!
अखिललोक पुरुषा!
तुम्हारा चरित्र समस्त भारत वीरों के लिए अनुकरणीय है। 19
अगली बार एक और दिव्य लीला का दर्शन करेंगे, तरेंगे...!
स्वस्ति।

‘क्विज’

आयोजक - एन.प्रत्यूषा

१) श्री रामजी का जन्म किस वंश में हुआ था?

अ) चन्द्र आ) सूर्य इ) इन्द्र ई) विष्णु

२) पाण्डु राज की मृत्यु कैसे हुआ?

अ) दुर्घटना आ) सद्मा इ) शाप ई) चोट

३) भीष्म पितामह के कितने नाम हैं?

अ) तीन आ) चार इ) दो ई) एक

४) कर्ण के पिता का नाम क्या है?

अ) सूर्य आ) इन्द्र इ) पाण्डु ई) धृतराष्ट्र

५) महाभारत का युद्ध कितने दिन हुआ?

अ) पन्द्रह आ) बीस इ) तीस ई) अठारह

६) प्रह्लाद के पिता का नाम क्या है?

अ) मैरावण आ) कुंभकर्ण इ) हिरण्याक्ष ई) हिरण्यकशिपु

७) तिरुपति से तिरुमला को पैदल जाने केलिए कितने रास्ते हैं?

अ) एक आ) दो इ) तीन ई) चार

जवाब

१) आ २) इ ३) अ ४) अ ५) ई ६) ई ७) आ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

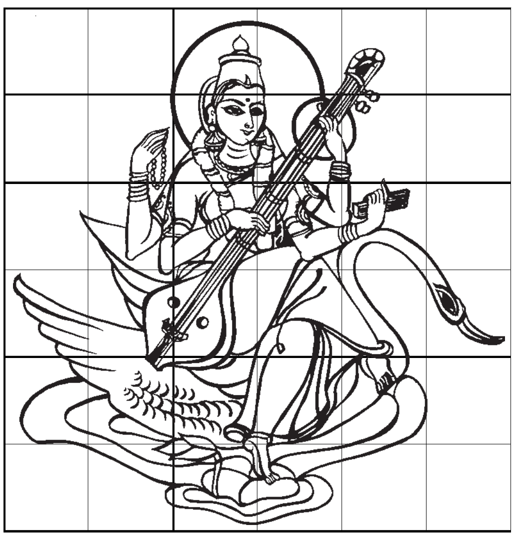

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Special Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

संसार कल्याण के लिए और करोना फैलाव से बचकर सहज स्थिति में लौटने के लिए १५-१२-२०२० में तिरुपति एस.वी.वेद विश्व विद्यालय में संपन्न धनप्रद श्री महाविष्णु यज्ञ में ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी और अतिरिक्त अधिकारी ने भाग लिया

१०-०१-२०२१ से १४-०१-२०२१ तक
तिरुमला के वसंत मंडप पर श्रीदेवी, भूदेवी सहित
श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी को बिल्व पत्र अर्चन संपन्न हुआ।

१४-०१-२०२१ में ति.ति.दे. के कार्यालय में संपन्न
श्री गोदा विवाह में ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी,
अतिरिक्त अधिकारी और सदस्यों ने भाग लिया।

१५-०१-२०२१ में तिरुमला में संपन्न पारवेट उत्सव में भाग लिये ति.ति.दे. कार्यकारी के अतिरिक्त अधिकारी श्री ए.वी.धर्मा रेड्डी जी और अन्य उच्च पदाधिकारी।

देवुनि कडपा

श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२०२१ फरवरी
१३ से २१ तक